www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आत्मीयता का माधुर्य और आनंद

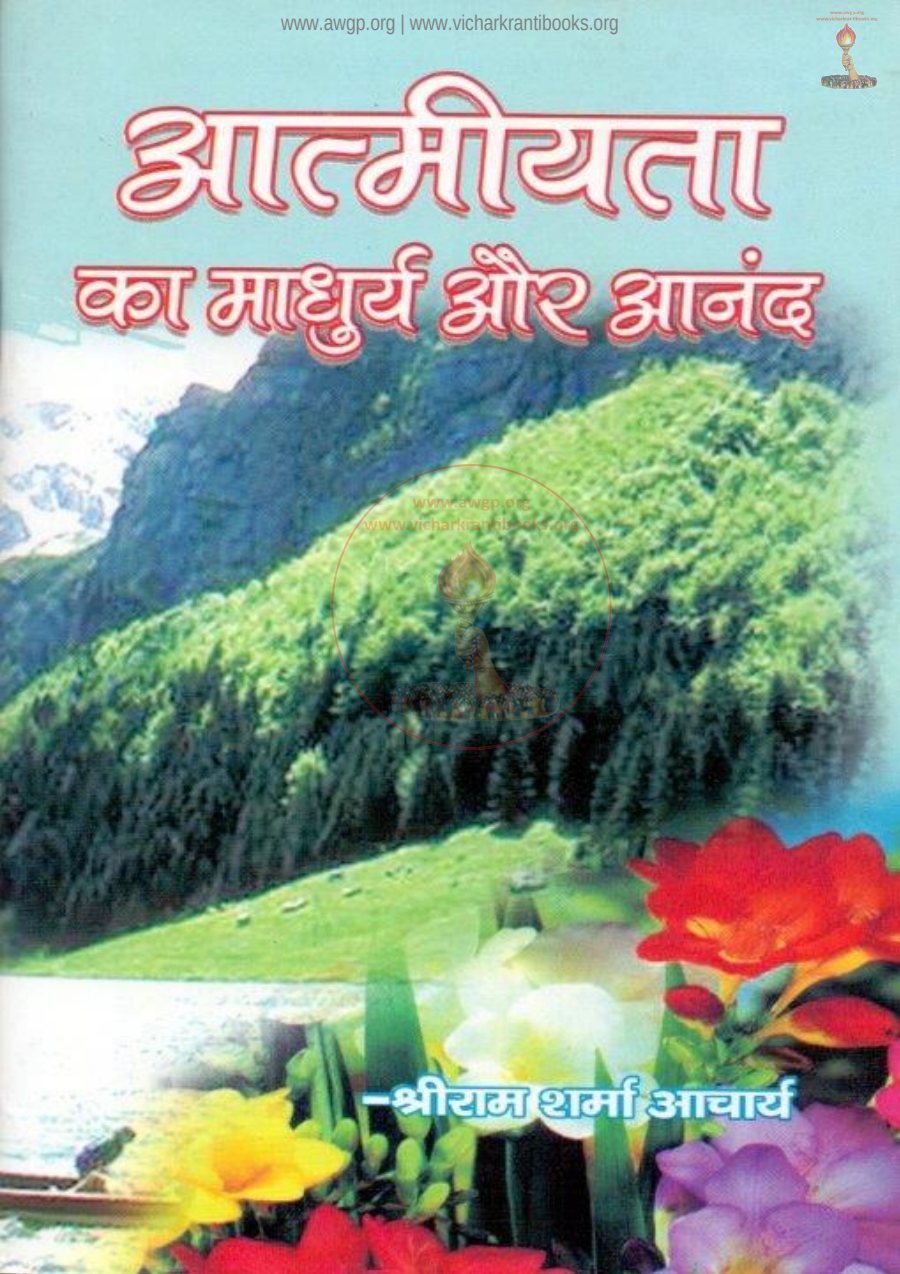

-श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आत्मीयता का माधुर्य और आनंद

लेखक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

फोन (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो० ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स (०५६५) २५३०२००

सन् २००९ मूल्य : १०.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

■

ISBN
81-89309-18-8

■

आत्मीयता की भावना को अभिव्यक्त करने के लिए दूसरों की सेवा-सहानुभूति, दूसरों के लिए उत्सर्ग का व्यावहारिक मार्ग अपनाना पड़ता है और इससे एक सुखद शांति, प्रसन्नता, संतोष की अनुभूति होती है। इस तरह आत्मीयता एक सहज और स्वाभाविक, आवश्यक वृत्ति है, जिससे मनुष्य को विकास, उन्नति, आत्म-संतोष की प्राप्ति होती है।

मुद्रक :
युग निर्माण, प्रेस
मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सघन आत्मीयता : संसार की सर्वोपरि शक्ति

संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं, एक वे जो शक्तिशाली होते हैं, जिनमें अहंकार की प्रबलता होती है। शक्ति के बल पर वे किसी को भी डरा धमकाकर वश में कर लेते हैं। कम साहस के लोग अनायास ही उनकी खुशामद करते रहते हैं, किंतु भीतर-भीतर उन पर सभी आक्रोश और घृणा ही रखते हैं। उसकी शक्ति घटती दिखाई देने पर लोग उससे दूर भागते हैं, यही नहीं कई बार अहंभाव वाले व्यक्ति पर घातक प्रहार भी होता है और वह अंत में बुरे परिणाम भुगतकर नष्ट हो जाता है। इसलिए शक्ति का अहंकार करने वाला व्यक्ति अंततः बड़ा ही दीन और दुर्बल सिद्ध होता है।

एक दूसरा व्यक्ति भी होता है—भावुक और करुणाशील। दूसरों के कष्ट, दुःख, पीड़ाएँ देखकर उसके नेत्र तुरंत छलक उठते हैं। वह जहाँ भी पीड़ा, स्नेह का अभाव देखता है वहीं जा पहुँचता है और कहता है, लो मैं आ गया और कोई हो न हो तुम्हारा मैं जो हूँ। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा तुम्हारे पास जो कुछ नहीं, वह मैं दूँगा। उस करुणापूरित अंतःकरण वाले मनुष्य के चरणों में संसार अपना सब कुछ न्यौछावर कर देता है। इसलिए वह कमजोर दिखाई देने पर भी बड़ा शक्तिशाली होता है। यही वह रचनात्मक भाव है जो आत्मा की अनंत शक्तियों को जाग्रत कर उसे पूर्णता के लक्ष्य तक पहुँचा देता है। इसीलिए विश्व-प्रेम को ही भगवान् की सर्वश्रेष्ठ उपासना के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

जीवन के सुंदरतम रूप की यदि कुछ अभिव्यक्ति हो सकती है तो वह प्रेम में ही है, पर उसे पाने और जाग्रत करने का यह अर्थ नहीं होता कि मनुष्य सुख और मधुरता में ही विचरण करता रहे। वरन् उसे कष्ट, सहिष्णुता और उन वीरोचित प्रयत्नों का जागरण करना भी अनिवार्य हो जाता है, जो प्रेम की रक्षा और मर्यादा के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पालन के लिए अनिवार्य होते हैं। प्रेम का वास्तविक आनंद तभी मिलता है।

प्रेम संसार की ज्योति है और सब उसी के लिए संघर्ष करते रहते हैं। सच्चा समर्पण भी प्रेम के लिए होता है, इसीलिए यह जान पड़ता है कि विश्व की मूल रचनात्मक शक्ति यदि कुछ होगी तो वह प्रेम ही होगी और जो प्रेम करना नही सीखता, उसे ईश्वर की अनुभूति कभी नहीं हो सकती। तुलनात्मक अध्ययन करके देखें तो भी यही लगता है कि परमेश्वर की सच्ची अभिव्यक्ति ही प्रेम है और प्रेम भावनाओं का विकास कर मनुष्य परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। प्रेम से बढ़कर जोड़ने वाली (योग) शक्ति संसार में और कुछ भी नहीं है।

पर वह भ्रांति नहीं होनी चाहिए कि हमें जो वस्तु परमप्रिय लगती है, उस पर हमारा अधिकार हो गया और यदि उसे सुविधापूर्वक नहीं प्राप्त कर सकते, तो अनधिकार चेष्टाओं द्वारा प्राप्त करें। प्रेम, प्रेम की इच्छा तो करता है, पर उसकी रति आत्मा है, कोई और माध्यम या साधन नहीं। आत्म-जगत् अपने-आप में इतना परिपूर्ण है कि उसका रमण करने पर हमें वह सुख अपने-आप मिलने लगता है, जिसकी हम प्रेमास्पद से अपेक्षा करते हैं। इसलिए पदार्थों के प्रेम को क्षणभंगुर और ईश्वरीय प्रेम को दिव्य और शाश्वत मान लिया गया है।

वह निःस्वार्थ होता है और उसके लिए होता है, जो न कहीं दिखाई देता है और न सुनाई। मालूम नहीं पड़ता कि अपनी आवाज और भावनाएँ उस तक पहुँचती भी हैं अथवा नहीं। पर हमारी हर कातर पुकार के साथ अंतःकरण में एक संतोष और सांत्वना की अंतर्वृष्टि होती है। वह बताती है कि तुम्हारा विश्वास और तुम्हारी प्रार्थना निरर्थक नहीं जा रही। मूल में बैठी हुई आत्म-प्रतिभा स्वयं विकसित होकर मार्गदर्शन कर रही है। विकास की यह प्रक्रिया ईश्वर प्रेमी की अनेक प्रसुप्त प्रतिभाओं और बौद्धिक क्षमताओं का जागरण ही करती है। मेलों में उड़ाए जाने वाले गुब्बारों के नीचे एक प्रकार का ऐसा पदार्थ जलाया जाता है, जिससे गैस बनती है और वह गैस ही उस गुब्बारे को उड़ाकर दूर क्षितिज के पार तक पहुँचा देती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आत्मीयता की अंतःकरण में उठने वाली लपटें ऐसी ही हैं, जो शरीर की, मन की, बुद्धि की और आत्म-चेतना की शक्तियों का उद्दीपन कर उन्हें ऊपर उठाती रहती हैं और विकास की इस हलचलपूर्ण अवस्था में भी वह सुख और स्वर्गीय सौंदर्य की रसानुभूति करता रहता है, भले ही माध्यम कुछ न हो। भले ही वह विकास के साथ ही रमण कर रहा हो, उसे अपना प्रेमी परमेश्वर दिखाई भी न देता, हो तो भी प्रकृति के अंतराल से उसकी दिव्य-वाणी और उसका दिव्य आश्वासन भरा प्रकाश फूटता ही रहता है।

निष्काम प्रेम में वह शक्ति है, जो प्रवाह बनकर फूटती है और न केवल दो-चार व्यक्तियों में वरन् हजारों-लाखों के जीवन में आनंद का स्रोत बनकर उमड़ पड़ती है, वह हजारों कलुषित अंतःकरणों को धोकर उन्हें निर्मल बना देती है। तुलसीदास जी ने भगवान से प्रेम किया था, वह प्रेम जब बहुजन हिताय के रूप में फूटा तो न केवल परमात्मा के प्रति भक्ति, श्रद्धा और विश्वास की लहरें फूटीं वरन् सेवा सहिष्णुता, दांपत्य प्रेम, पारिवारिक मर्यादा, संतोष, दया, करुणा, उदारता आदि ऊर्ध्वमुखी चेतनाओं की लहरें समाज में फूट निकलीं।

तुलसीदास जी नहीं रहे, पर उनकी आत्मा आज भी हजारों लोगों को अपनी आत्मा से मिलाकर ईश्वरीय आत्मा में परिणत करती है। ईश्वर के प्रति प्रेम का अर्थ स्वार्थ या संकीर्णता नहीं, वरन् अपने आपको उस मूल बिंदु के साथ जोड़ देना है, जो अपने आपको जन-जन के जीवन में विकीर्ण करता रहता है। तात्पर्य यह है जब हम ईश्वर से प्रेम करते हैं, तब संसार में व्यक्त चेतना के प्रत्येक कण से प्रेम करते हैं, ईश्वर की यही परिभाषा भी तो है।

इस छोटी-सी बात को न समझ पाने के कारण या तो लोग ईश्वर-प्रेम नाम पर कर्त्तव्य-परायणता से विमुख होते हैं अथवा पदार्थ या शारीरिक प्रेम (वासना) में इतने आसक्त हो जाते हैं कि प्रेम की व्यापकता और अक्षुण्ण सौंदर्य के सुख का उन्हें पता ही नहीं चलता। ईश्वर से प्रेम करने का अर्थ विश्व सौंदर्य के प्रति अपने आपको समर्पित करना होता है। उसमें कहीं न तो आसक्ति का भाव आ सकता है और न विकार। यह दोष तो उसी प्रेम में होंगे, जिसे केवल स्वार्थ और वासना के लिए किया जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवन भर हम जिन व्यक्तियों के संपर्क में आते हैं, ईश्वर प्रेम का प्रकाश उन सबके प्रति प्रेम के रूप में भी प्रस्फुटित होता है। इसलिए ईश्वर प्रेम और समाज-सेवा में कोई अंतर नहीं है। दोनों ही स्थितियों में आत्म-सुख, आत्म-विश्वास और आत्म-कल्याण का उद्देश्य भगवान की प्रसन्नता होनी चाहिए। भगवान की प्रसन्नता का अर्थ है कि उस प्रेम में भय, कायरता, क्षणिक सुख का आभास न होकर शाश्वत् प्रफुल्लता और प्रमोद होना चाहिए। ऐसा प्रेम कभी बन्धनकारक या रुकने वाला नहीं होता। उसकी धाराएँ निरंतर जीवन को प्राणवान बनाती रहती हैं। वह मनुष्य ऊपर से चाहें कितना ही कठोर क्यों न दिखाई देता हो, उसके भीतर आत्मीयता की लहरें निरंतर हिलोरें ले रही होती हैं।

इंद्रियों के आकर्षण फुसलाने से नहीं, कठोरता से दमन किए जाते हैं और इसके लिए साहस की आवश्यकता होती है। जो आत्म-दमन कर सकता है, वही सच्चा विजेता है। सच्चा विजेता ही सच्चा प्रेमी और ईश्वर का भक्त होता है। यह बात कुछ अटपटी-सी लगती है, किंतु कर्मयोग के सच्चे साधक को कठोरता में भी भावशीलता का संपूर्ण आनंद मिलता है। इसलिए उसे मोह की आवश्यकता नहीं होती वरन् मोह के बीच में भी एक दिव्य प्रकाश की अनुभूति का आनंद लिया जा सकता है।

मर्यादाओं के पालन में जो कठोरता है, उसमें आत्मीयता का अभाव नहीं होता। अपनत्व तो संसार के कण-कण में विद्यमान है। ऐसा कौन-सा प्राणी है, ऐसा कौन-सा पदार्थ है जहाँ मैं नहीं हूँ। प्राणी-पशु, कीट-पतंग सभी के अंदर तो 'अहं भाव' से परमात्मा बैठा हुआ है, पर तो भी किसी के लिए वह बंधन तो नहीं है ? वह बंधन मुक्त आनंद की स्थिति है, इसलिए वह किसी को आनंद से गिराएगा क्यों ? वह दया और करुणा का सागर है, लोगों को उससे वंचित रखेगा क्यों ? लेकिन वह यह भी न चाहेगा कि एक जीव दूसरे जीव की आकांक्षाओं और मर्यादाओं पर छा जाए। संसार उसी का है, पर तो भी वह इतना दयालु है कि किसी पर अपनी उपस्थिति भी प्रकट नहीं करता, किंतु मर्यादाओं के मामले में वह कठोर और निपुण है। किसी भी दुष्कर्म को प्राणी उससे छिपाकर नहीं ले जा सकता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसका अपनत्व निष्काम है, इसलिए जीवन लक्ष्य की प्राप्ति और अपने जीव भाव को ब्राह्मीभाव में परिणत करने के लिए मनुष्य को उन्हीं नियमों का पालन करना अनिवार्य हो जाता है।

अपनत्व पृथ्वी की मिट्टी, सूर्य के कण और विश्व के कण-कण में व्याप्त परमाणुओं में छिपा स्पंदन है। वह स्वर्गीय है, वह मर्त्यभाव में भी अमृतत्व का संचार किया करता है, जड़ में भी चेतनता की अनुभूति कराया करता है। इतिहास प्रसिद्ध घटना है कि अपनी साधना के अंतिम दिनों में महर्षि विश्वामित्र ने नदियों से बातचीत की थी। ऋग्वेद में ऐसे सूक्त हैं जिनके देवता नदी हैं और दृष्टा ने उनसे बातचीत की है। उस वार्तालाप में और कुछ आधार भले ही न हो, पर उसमें समस्त जड़-चेतन जगत के प्रति आत्मारोपण का अनोखा उदाहरण प्रस्तुत है।

उस विज्ञान को समझने में भले ही किसी को देर लगे, किंतु भावनाओं में जड़ पदार्थों को भी चेतन कर देने की शक्ति है और प्रेम इन समस्त भावनाओं का मूल है। इसलिए यह कहना अत्युक्ति नहीं कि आत्मीयता-संपन्न व्यक्ति के लिए संसार में चेतन ही नहीं जड़ भी इतने ही सुखदायक होते हैं। जड़ भी प्रेम के अधीन होकर नृत्य करते हैं। प्रेम के लिए सारा संसार तड़पता रहता है। जो इस तड़पन को समझ कर, लेने की नहीं देने और निरंतर देने की ही बात सोचता है, सारा संसार उसके चरणों पर निवेदित हो जाता है।

प्रेम संसार का सर्वोपरि आकर्षण—

क्या रागी और क्या विरागी, सभी यह कहते पाए जाते हैं कि—"यह संसार मिथ्या है, भ्रम है, दुःखों का आगार है", किंतु तब भी सभी जी रहे हैं। ऐसा भी नहीं कि लोग विवशतापूर्वक जी रहे हैं। इच्छापूर्वक जी रहे हैं और जीने के लिए अधिक से अधिक चाहते हैं, सभी मरने से डरते हैं। कोई भी मरना नहीं चाहता।

दुःखों के बीच भी जीने की यह अभीप्सा प्रकट करती है कि संसार में अवश्य ही कोई ऐसा आकर्षण है जिसके लिए सभी लोग दुःख उठाने में तत्पर हैं। देखा जा सकता है कि लोग सुंदर फल-फूलों को प्राप्त करने के लिए कटीले झाड़-झंखड़ों में धँस जाते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं। मधु के लिए मधुमक्खियों के डंक सहते हैं। मानिक-मोतियों के लिए भयंकर जंतुओं से भरे समुद्र में पैठ जाते हैं। वे फूलों-फलों, मधु और मणिक, मोतियों के लिए काँटों, मक्खियों और मगर-मत्स्यों की जरा भी परवाह नहीं करते। उनकी चुभन, दंश और आक्रमण को साहसपूर्वक सह लेते हैं।

तो इस दुःख और कष्टों से भरे संसार सागर में ऐसा कौन-सा फल, मधु अथवा रत्न है जिसके लिए मनुष्य दुःखों का भार ढोता हुआ खुशी-खुशी जीता चला जा रहा है और जब तक अवसर मिले जीने की इच्छा रखता है ? निश्चय ही संसार का वह फल, वह मधु और वह रत्न प्रेम है, जिसके लिए मनुष्य जी रहा है और हर मूल्य पर जीना चाहता है। अब यह बात भिन्न है कि उनका अभीष्ट प्रेम सांसारिक है, वस्तु या पदार्थ के प्रति है, अथवा प्रेम-स्वरूप परमात्मा के प्रति है। दिशाएँ दो हो सकती हैं, किंतु आस्था एक है और आकर्षण भी अलग-अलग नहीं है। इसी प्रेमस्वरूप आधार पर संसार ठहरा हुआ है। इसी के बल पर सारी विधि-व्यवस्था चल रही है। एक यही संसार का सत्य और सार है जिसे आत्मीयता, प्रेम, अपनत्व आत्म-भाव का आकर्षण कहा जाता है।

आत्मीय संवेदना ही आनंद का आधार है, और आनंद ही मनुष्य की जिज्ञासा है। इस जिज्ञासा की पूर्ति के लिए ही मनुष्य सारे कष्ट उठाता हुआ सुख मानता है। यदि यह जिज्ञासापूर्ण हो जाए, उसे प्रेम का सच्चा रूप प्राप्त हो जाए तब उसके आनंद की सीमा कहाँ तक पहुँच जाएगी इसका अनुमान लगाना कठिन है। इसे तो भुक्तभोगी ही जान सकते हैं।

जिनके हृदय में प्रेम का प्रकाश जगमगा उठता है, उनके जीवन में आनंद भर जाता है। इस हाड़-माँस से बने मानव शरीर में देवत्व के समाविष्ट का आधार प्रेम ही है। प्रेम की प्रेरणा से साधारण मनुष्य उच्च से उच्चतर बनता चला जाता है। प्रेम मानव जीवन की सर्वोच्च प्रेरणा है। शेष सारी प्रेरणाएँ इस एक ही मूल प्रेरणा की आश्रित शाखा-प्रशाखा है। स्वाधीनता और सद्गति दिलाने वाली भावना एकमात्र प्रेम ही है। संसार की रचना और प्रेरणा का सारा तत्व यह प्रेम ही है। इसी से जीवन समृद्ध बनता, दुःख की निवृत्ति होती है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और परम लक्ष्य की प्राप्ति होती है। प्रेम परमात्मा रूप है, आनंद और उल्लास का आदि तथा अंतिम स्रोत है।

इसके परिणाम भी सदैव तीनों काल में दिव्य ही होते हैं। आत्म-विश्वास, साहस, निष्ठा, लगन और आशा आदि के जीवंत भाव प्रेमामृत की सहज तरंगें हैं। जिस प्रकार पर्वतों पर संचित हिम कुछ काल में परिपाक होने पर जल के रूप में बह-बहकर धरती को सराबोर कर देता है, उसकी जलन, उसका ताप और उसकी नीरसता हर लेता है, उसी प्रकार हृदय में संचित प्रेम भी परिपाक के पश्चात् बहकर मनुष्य और मनुष्यता दोनों को आनंद, उल्लास और प्रसन्नता से ओत-प्रोत कर देता है। प्रेम का अभाव मनुष्य को नीरस, शिथिल, अतृप्त और कर्कश बना देता है, जिससे जीवन का सौंदर्य, सारा आकर्षण और सारा उत्साह समाप्त हो जाता है। जो प्रेम का आदान-प्रदान नहीं जानता वह निश्चय ही जीना नहीं चाहता। वास्तविक जीवन का लक्षण प्रेम ही है।

संसार अंधकार का घर कहा गया है। विषय-वासनाओं के आसुरी तत्व यहाँ पर मनुष्य को अंधकार की ओर ही प्रेरित करते रहते हैं। संसार की इन अंधकारपूर्ण प्रेरणाओं के बीच प्रेम ही एक ऐसा तत्व है जिसकी प्रेरणा प्रकाश की ओर अग्रसर करती है। प्रेम ही आत्मा का प्रकाश है। इसका अवलंबन लेकर जीवन पथ पर चलने वाले सत्पुरुष काँटों और कटुता से परिपूर्ण इस संसार को सहजानंद की स्थिति के साथ पार का जाते हैं। प्रेम का आश्रय परमात्मा का आश्रय है। इस स्थूल संसार को धारण करने वाली सत्ता प्रेम ही है। यही प्रेम आत्मा के रूप में जड़ चेतन में परिव्याप्त हो रहा है। व्यक्ति और समष्टि में आत्मा का यह प्रकाश ही ईश्वर की मंगलमयी उपस्थिति का आभास करता है।

आत्मीयता मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति होती है। आत्मीयता की प्यास, प्रेम की आवश्यकता मनुष्य जीवन के लिए सहज स्वाभाविक है। इसकी पूर्ति न होने से मनुष्य एक ऐसा अभाव अनुभव करता है जिसका कष्ट संसार के सारे दुःखों से अधिक यातनादायक होता है। बच्चा माँ से प्रेम चाहता है। पत्नी पति से प्रेम चाहती है और पुरुष नारी से प्रेम की कामना करता है। पड़ोसी-पड़ोसी से, राष्ट्र राष्ट्रों से,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य मनुष्यों से, यहाँ तक कि जड़ वस्तुएँ भी प्रेम और आत्मीयता की भूखी रहती हैं। प्रेम पाने पर पशु अपनी भंगिमाओं से और जड़ पदार्थ अपनी उपयोगिता के रूप में प्रेम का प्रतिपादन करते हैं। प्रेम का यह आदान-प्रदान रुक जाए तो संसार असहनीय रूप से नीरस, कटु और तप्त हो उठे। पदार्थ अनुपयोगी हो उठें और मनुष्य घृणा, क्रोध और द्वेष की भावना से आक्रांत हो अपनी विशेषता ही खो दें। चारों ओर ताप ही परिव्याप्त हो जाए। प्रेम जीवन की एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है जिसकी पूर्ति आदान-प्रदान के आधार पर होती ही रहनी चाहिए। तभी हम समस्त संसार के साथ विकास करते हुए अपने चरम लक्ष्य उस परमात्मा की ओर बढ़ सकेंगे जो अनंतानंद स्वरूप है, सत् है और चेतन है। प्रेम के आदान-प्रदान के बिना जीवन में सच्चा संतोष कदापि नहीं मिल सकता। मनुष्य आदि से अंत तक कलप-कलप कर जिएगा और तड़प-तड़पकर मर जाएगा।

प्रेम मनुष्यता का सबसे प्रधान लक्षण है और इसकी पहचान है त्याग अथवा उपसर्ग। यों तो प्रायः सभी मनुष्य प्रेम का दावा करते हैं। पर यथार्थ बात यह है कि उनका अधिकांश प्रेम स्वार्थ से प्रेरित होता है। वे अपने 'स्व' अपने 'अहं' की पूर्ति के लिए प्रेम का प्रदर्शन करते हैं और 'स्व' की तुष्टि हो जाने पर आँखें फेर लेते हैं। यह वह प्रेम नहीं है जिसे मनुष्यता का लक्षण कहा गया है। यह तो अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं और लौकिक आवश्यकता की पूर्ति का एक उपाय है, साधन है। इससे वह आध्यात्मिक भाव—वह ईश्वरीय आनंद जाग्रत नहीं हो सकता जो कि सच्चे प्रेम की उपलब्धि और जिसको पाकर मानव जीवन कृतार्थ हो जाता है।

जहाँ सच्चा प्रेम है, आध्यात्मिक आत्मीयता है वहाँ त्याग, उत्सर्ग और बलिदान की भावना होना अनिवार्य है। प्रेम में देना ही देना होता है लेने की भावना को वहाँ अवसर नहीं रहता। लेन-देन लौकिक जीवन का साधारण नियम है। इसमें प्रेम शब्द का आरोप करना अन्याय है। प्रेम जैसे पवित्र तथा इच्छा रहित ईश्वरीय भाव का अपमान करना है। प्रेम विशुद्ध बलिदान है। इसमें प्रेमी अपने प्रिय के लिए सब कुछ उत्सर्ग करके ही तृप्ति का अनुभव करता है। प्रेम में देना ही देना होता है लेना कुछ नहीं, पर परिवार, समाज, राष्ट्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और संसार के लिए निःस्वार्थ त्याग, निर्लेप बलिदान की भावना दिखलाई दे वहाँ पर ही प्रेम का अनुमान करना चाहिए। जिसमें दूसरों के लिए अपना सब कुछ दे डालने की भावना तो हो, पर उसके बदले में कुछ भी लेने का भाव न हो तो समझना चाहिए कि उस मनुष्य में सच्ची मनुष्यता का निवास है, वह धरती पर शरीर से देवता और अपनी आत्मा से परमात्मा रूप है।

प्रेम संसार का स्थायी सत्य है। यों तो संसार के रूप में जो कुछ भी दिखलाई देता है, सब सत्य जैसा ही आभासित होता है, पर वह सत्य नहीं सत्य का भ्रम मात्र है। आज देखते हैं कि हमारा एक परिवार है, स्त्री है, बच्चे हैं हम स्वयं हैं। जमीन है, जायदाद है, धन-दौलत है, संपत्तिं है, संपदा है। सब व्यवहार में आते हैं, सब सत्य जैसे भासित होते हैं, पर क्या यह स्थाई सत्य है। कारण आता है, परिस्थिति उपस्थित होती है तो जीवन की अवधि समाप्त हो जाती है, सब कुछ स्वप्न हो जाता है। परिस्थिति उत्पन्न होती है तो जमीन बिक जाती है, जो कुछ आज हमारा था कल दूसरे का हो जाता है। ऐसी परिवर्तनशील बातों को सत्य कैसे माना जा सकता है ? सत्य वह है जो तीनों कालों में एक जैसा ही बना रहे। प्रेम ही केवल ऐसा सत्य है जो अपरिवर्तनशील और तीनों कालों में स्थिर बना रह सकता है। प्रिय के बिछुड़ जाने पर उसके प्रति रहने वाला प्रेम नहीं मरता, वह यथावत् बना रहता है। जमीन-जायदाद चली जाती है, पर उसके प्रति लगाव समाप्त नहीं होता, धन चला जाता है पर उसके प्रति अभीप्सा बनी रहती है। प्रेम ही संसार का स्थिर तथा स्थायी सत्य है और सारी वस्तुएँ नश्वर तथा परिवर्तनशील हैं। ऐसे प्रेम की साधना छोड़कर लौकिकता की आराधना करना सत्य को छोड़कर उसकी छाया पकड़ने की तरह अबुद्धिमत्तापूर्ण है।

प्रेम परमात्मा की उपासना का भावनात्मक रूप है। जो आत्मा को, परिवार को, राष्ट्र और समाज को प्रेम करता है, सारे मनुष्यों को यहाँ तक कि समस्त जड़-चेतन में आत्मीयता का सच्चा भाव रखता है, वह परमात्मा का सच्चा भक्त है। प्रेम हृदय की उस भावना का वाचिक रूप है जो अद्वैत का बोध कराती है। उसे 'मैं' और 'तुम' का, अपने-पराए का विलगाव नहीं रहता। समष्टिगत विशाल भावना को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निःस्वार्थ परिपाक की आराधना मानव को महामानव और पुरुष को पुरुषोत्तम बना देती है। अस्तु इसी साध्य और महानता की उपासना श्रेयस्कर है, कल्याण तथा मंगलकारी है।

आत्मीयता की शक्ति—

प्रेम, आत्मीयता मनुष्य की सहज स्वाभाविक वृत्तियाँ हैं, जिनके व्यक्त न होने पर मनुष्य जीवन में एक अभाव-सा अनुभव करता है। लीवमैन ने लिखा है, "अपने पड़ौसी से मैत्री भाव रखना, उससे प्रेम करना, स्वयं से प्रेम करने की आवश्यक सीढ़ी है।" दूसरों से प्रेम प्राप्ति की ही नहीं वरन् अपना प्रेम दूसरों को देने की भी प्रबल वृत्ति मनुष्य में काम करती है। जब तक इसकी पूर्ति नहीं होती मनुष्य को पूर्णतः संतोष, शांति प्राप्त नहीं होती, न उसका आंतरिक विकास होता है।

जीवन में स्नेह-प्रेम एक महत्त्वपूर्ण स्वाभाविक आवश्यकता है। मनुष्य को जब तक किसी के प्रेम की प्राप्ति नहीं होती तब तक उसे जीवन में कुछ अभाव और अशांति का अनुभव होता है। प्रेम प्राप्ति की भूख बचपन में अधिक पाई जाती है। जिन बच्चों को अपने माँ-बाप का प्रेम नहीं मिलता उनका व्यक्तित्व पुष्ट नहीं होता। कई मानसिक रोगों का कारण तो बचपन में माँ-बाप के प्यार का अभाव होना ही होता है। चिंता, घृणा, क्रोध, हीनता की भावना बहुत कुछ इसी कारणवश पैदा हो जाती है। दूसरों के स्नेह-प्रेम से वंचित व्यक्तियों को संसार निर्दयी, क्रूर और क्लेशमय नजर आता है।

प्रेम प्राप्ति की तरह ही मनुष्य में प्रेम देने की भावना भी होती है। प्रेम लेने की भावना बचपन की निशानी है। प्रेम देने की भावना पुष्ट व्यक्तित्व और प्रौढ़ता का आधार है। प्रेम लेने की भावना स्वार्थ, परावलंबन का रूप है तो प्रेम देना परमार्थ और स्वावलंबन है।

आत्मीयता की भावना की अभिव्यक्ति के लिए दूसरों की सेवा सहानुभूति, दूसरों के लिए उत्सर्ग का व्यावहारिक मार्ग अपनाना पड़ता है और इससे एक सुखद शांति, प्रसन्नता, संतोष की अनुभूति होती है। दूसरों की कठिनाइयाँ दूर करने के प्रयत्न में अपनी कठिनाइयाँ स्वयं, स्वतः दूर हो जाती हैं। दूसरों से आत्मीयता रखने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर आत्म-प्रेम, आत्म-मैत्री सहज ही पैदा हो जाती है। मन की समस्त शक्तियाँ केंद्रीभूत होकर काम करने लगती हैं। इस तरह आत्मीयता एक सहज और स्वाभाविक आवश्यक वृत्ति है जिससे मनुष्य को विकास, उन्नति, आत्म-संतोष की प्राप्ति होती है।

छोटा बच्चा सदैव दूसरों का प्यार चाहता है। चाह या स्वार्थ बचपन की स्थिति है, जिसमें दूसरों से सुख, आराम, प्रेम की आकांक्षा रहती है। यह वृत्ति अधिक उम्र वालों में भी हो सकती है। बचपन से आगे की विकसित भावना है अपने आपको सुखोपभोग—आवश्यक पदार्थों का दूसरों के लिए त्याग करना। यह देने की वृत्ति है। जिसमें त्याग है, कष्ट सहिष्णुता है, यही आत्म-विकास की सच्ची कसौटी है। त्याग से आत्मीयता के स्वरूप का निर्णय होता है। इस तरह यह स्वार्थ से परमार्थ की साधना है। परमार्थ के लिए अपने आपको घुला देता है, वही आत्म-विकास की उच्च स्थिति प्राप्त करता है।

यज्ञाग्नि के दो स्वरूप माने गए हैं एक "स्वाहा" दूसरा "स्वधा"—स्वाहा का अर्थ है आत्माहुति देना, त्याग उत्सर्ग करना और स्वधा के माने है आत्म-धारण करना। दोनों के संयुक्त स्वरूप में यज्ञाग्नि प्रकट होती है। प्रेम की आकांक्षा, इच्छा, प्रेम प्राप्ति का भाव, आत्म धारण करने के लिए है। प्रेम धारण नहीं किया जाएगा तो फिर दिया कहाँ से जाएगा। प्रेम प्राप्ति की लालसा सहज रूप में प्रेम-यज्ञ का प्रारंभिक कृत्य है। आम का पौधा सिंचाई सुरक्षा, खाद सेवा आदि के रूप में जब स्वधा शक्ति प्राप्त करता है तभी उस शक्ति को कई गुना असंख्य रूपों में उत्सर्ग कर सकता है। स्त्री अपने पति का अजस्त्र प्रेम प्राप्त करके ही उसे, बालकों को दे सकने में समर्थ होती है। जिसे किसी का प्रेम नहीं मिला वह दूसरे को भी शायद ही कुछ दे सके।

स्वधा शक्ति की प्राप्ति के अनंतर मनुष्य के भावों का विकास होता है, और वह अपने आपको स्वाहा करने लगता है, त्याग, आत्मोत्सर्ग करता है और स्वार्थ की जगह परमार्थ-त्याग का स्थान ले लेता है। जिससे प्रेम किया जाता है उसके लिए त्याग करने की इच्छा बढ़ जाती है। मनुष्य कष्ट उठाने लगता है। तब प्रेम का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यावहारिक स्वरूप त्याग ही हो जाता है। आत्मोत्सर्ग, बलिदान की स्थिति के अनुसार ही प्रेम का सत्य स्वरूप विकसित होने लगता है। जब मनुष्य अपने आपको पूर्णतया स्वाहा कर देता है तब एक मात्र प्रेम की सत्ता ही सर्वत्र शेष रह जाती है।

जहाँ प्रतिदान की आकांक्षा है वहाँ प्रेम नहीं रहता। प्रेम केवल उत्सर्ग करना ही जानता है। जहाँ बदले में लेने की भावना है वहाँ प्रेम नहीं स्वार्थ है। उससे मनुष्य की आत्मा को परितोष प्राप्त नहीं होता। मनुष्य के आंतरिक बाह्य जीवन में अशांति, क्लेश, असंतोष ही बना रहेगा। स्त्री-पुरुष, माता-पिता और संतान, मित्र-मित्र, भक्त और भगवान के बीच जब स्वार्थमय प्रेम का आचरण होने लगता है तो सदैव विपरीत परिणाम ही मिलते हैं। गृहस्थ जीवन की अशांति, कलह, राग, द्वेष, मनुष्य-मनुष्य के बीच की धोखेबाजी, चालाकी, माता-पिता के प्रति अनुशासनहीनता, क्रूरता, भगवान के प्रति नास्तिकता, अविश्वास मनुष्य के बनावटी प्रेम की आड़ में काम कर रहे स्वार्थ, लोभ, मोह आदि के ही परिणाम हैं। कृत्रिम आत्मीयता ऐसी ही कष्टकर होती है।

सच्ची आत्मीयता दिव्य-तत्व है। इसके परिणाम सदैव दिव्य ही मिलते हैं, किंतु वह तब जबकि मनुष्य पुरस्कार की कामना से रहित होकर त्याग, बलिदान, आत्मोसर्ग करता है। इसका पुरस्कार तो स्वतः प्राप्त होता है और वह है आत्मसंतोष, शांति, प्रसन्नता, जीवन में उत्साह आदि।

आत्मीयता प्रेरित त्याग से विचारों में एकाग्रता पैदा होती है। मानसिक स्थिरता से पूर्ण तादात्म्य और इससे आत्म-साक्षात्कार की प्राप्ति होती है। भक्ति-योग का तत्वज्ञान हृदयंगम किया जाना ईश्वर प्राप्ति के लिए आवश्यक मार्ग है।

जब किसी काम से प्रेम नहीं होता तो उसमें कर्त्तव्य बुद्धि नहीं रहती। मनुष्य कई भूलें करता है, काम को बिगाड़ता है। वह उसे भारस्वरूप लगता है, दुखद बंधन जैसा। मनुष्य अपने काम से जी चुराने लगता है। प्रेम की शक्ति से ही कर्त्तव्य पूर्ण होता है। इसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अभाव में जबरन कार्य करने पर मनुष्य को शारीरिक और मानसिक रोग सताने लगते हैं।

अपनत्व के भाव में कठिन से कठिन काम भी सरल बन जाते हैं। उनमें कठिनाइयाँ होते हुए भी फूल चुनने जैसी सरलता महसूस होती है। प्रेम की अवस्था में कष्ट नाम की कोई स्थिति ही नहीं। प्रेम की धुन में कर्त्तापन और कर्मफल का ध्यान नहीं रहने से यह योगी की-सी स्थिति बन जाती है। केवल कर्त्तव्य ही सामने रहता है।

कर्त्तव्य के अभिमान और फल की आकांक्षा के साथ ही क्षमताओं का विकास रुक जाता है। यही कारण है कि एक सरकारी नौकर को दफ्तर का चार-छः घंटे का काम ही बोर कर देता है, जबकि देश प्रेमी, समाजसेवी, सेवानिष्ठ लोग अठारह घंटे काम करके भी नहीं थकते। प्रेम एक व्यापक तत्व है। उसके साथ ही अनंत शक्ति सामर्थ्य रहती है। उससे साधारण व्यक्ति भी महामानव बन जाता है।

अपनत्व से प्रसन्नता और सहज आनंद मिलता है। जिसमें शक्तियों का उद्रेक उसी तरह होता है जैसे पर्वतराज हिमालय अपने हृदय के अवयवों को पिघलाकर अनंत नदी स्रोत बहा देता है। आत्मविश्वास, निष्ठा, लगन, आशा की प्रबल हिलोरें मनुष्य के हृदय में उठने लगती हैं जो एक छोटे-से पुतले को तरंगित कर ऊँचा उठाती हैं। प्रेम के अभाव में मनुष्य थका-थका-सा रहता है। काम में मन नहीं लगता। फिर किसी भी क्षेत्र में सफलता मिलना दूर की बात है।

अपनत्व गिरे हुए मनुष्यों को उठाता है, क्योंकि गिरे हुए व्यक्ति वे होते हैं जिनके जीवन में प्रेम, स्नेह का अभाव रहा है। घर में परिजनों के प्रेम से वंचित लोग व्यसनी, परस्त्रीगामी, चरित्रहीन और पतित हो जाते हैं। पति अथवा सास-श्वसुर के अत्याचार से पीड़ित स्त्री घर से बाहर जाकर प्रेम की चाह करती है, जिसे उसे भ्रष्ट अथवा दूषित कहा जाता है। माँ-बाप के प्रेम से वंचित बच्चे निराशावादी, क्रोधी, ईर्ष्यालु, घृणा करने वाले, अन्यमनस्क, चरित्रहीन बन जाते हैं। लोगों में फैली हुई बहुत बुराइयों का मुख्य कारण उन्हें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवन में दूसरों के स्नेह-प्रेम से वंचित होना ही होता है। कोई भी प्रेममय व्यक्ति इन लोगों को अपना प्रेम देकर फिर से सुधार सकता है। हमारे ऋषियों में महात्मा बुद्ध, सुकरात, ईसा, मुहम्मद, रामकृष्ण आदि ने अपना निश्छल सहज प्रेम देकर अनेक पतितों का उद्धार किया।

जब मनुष्यों का दृष्टिकोण प्रेममय होता है तो उसे दूसरों के दुर्गुण न दिखाई देकर सद्गुण दिखाई देते हैं। इससे मनुष्य के दोषदर्शन का दुर्गुण दूर हो जाता है। दूसरों के दुर्गुण न देखने से आलोचना में भी मन नहीं लगता। हिंसा, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, डाह की भावनाएँ प्रेम से धुल जाती हैं। प्रेम में हिंसा नहीं दया करुणा का निवास होता है। प्रेममय व्यक्ति अपना अहित करने वालों के प्रति भी दया, क्षमता, सहिष्णुता की भावना रखता है। उनके सुधार के लिए शुभकामना करता है।

मनुष्य का जैसा दृष्टिकोण, चिंतन होता है वैसा ही उसके लिए यह संसार दिखाई देता है। मनुष्य जब दूसरों से प्रेम करता है तो दूसरे भी उसे प्रेम करते हैं, उसके प्रति सहानुभूति रखते हैं। संसार कुएँ की आवाज है। मनुष्य संसार के प्रति जैसा आचरण करेगा, संसार से उसे वैसा ही प्रत्युत्तर मिलेगा। प्रेम से ही प्रेम मिलता है। प्रेम—मैत्री के विचार पहले व्यक्तिगत जीवन में ही आत्म-प्रेम, आत्म-प्रसाद के रूप में मिल जाते हैं। इतना ही नहीं प्रेम एकात्मकता पैदा करता है। देखा जाता है कि जिन व्यक्तियों में परस्पर प्रेम होता है उनके रंग, रूप, स्वभाव, विचार धीरे-धीरे एक से बन जाते हैं।

प्रेम एक तरह की मानसिक स्थिति है। इसका प्रवाह जिस ओर होगा उसी तरह के परिणाम भी प्राप्त होंगे। प्रेम का सहज और सरल प्रवाह नैसर्गिक कार्यों में होता है। पानी सदैव ऊपर से नीचे की ओर बहता है, किंतु किसी पेड़ की जड़ों द्वारा सोख लिया जाता है तो वही मधुर फलों, सुंदर फूल और शीतल छाया में परिवर्तित हो जाता है। सांसारिक प्रवाह में इस शक्ति के लगे रहने पर मनुष्य का जीवन पाशविक परिधियों में घिरा रहता है। प्रेम के प्रवाह का संचालन विवेक द्वारा होने पर वह जीवन में सत्यं शिवम् सुंदरम् की प्राप्ति कराता है। जीवन विकास की ओर अग्रसर होता है। बार-बार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने आदर्श के प्रति बाह्य और आंतरिक क्षेत्र में प्रेम शक्ति का अभ्यास करने पर वैसा ही स्थाई भाव बन जाता है, फिर उसी की प्रेरणा से जीवन का संचालन होने लगता है। इस तरह के स्थायी भाव प्रारंभ में अधिक भी हो सकते हैं, किंतु उन सबमें समन्वय होना आवश्यक है। उच्च श्रेणी के श्रेष्ठ भावों की दिशा भी यदि अलग-अलग होगी तो वे आपस में टकराएँगे और शक्ति नष्ट होगी। यदि इन सभी भावों को आत्मविस्तार की दिशा में नियोजित रखा गया तो इनकी समन्वित शक्ति से अनुपम माधुर्य अनंत वैभव, असीम आनंद और अत्यंत सुख की प्राप्ति होगी।

❑ ❑

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पशु पक्षी और पौधों तक में सच्ची आत्मीयता का विकास

अल्वर्ट श्वाइत्जर जहाँ रहते थे, उनके समीप ही बंदरों का एक दल रहता था। दल के एक बंदर और बंदरिया में गहरी मित्रता हो गई। दोनों जहाँ जाते साथ-साथ जाते, कुछ खाने को पाता तो यही प्रयत्न करता कि उसका अधिकांश उसका साथी खाए। कोई भी वस्तु उनमें से एक ने कभी अकेले न खाई। उनकी इस प्रेम भावना ने अल्वर्ट श्वाइत्जर को बहुत प्रभावित किया। वे प्रातः प्रतिदिन इन मित्रों की प्रणय-लीला देखते जाते और एकांत स्थान में बैठकर घंटों उनके दृश्य देखा करते। कैसे भी संकट में उनमें से एक ने भी स्वार्थ का परिचय न दिया। अपने मित्र के लिए वे प्राणोत्सर्ग तक के लिए तैयार रहते, ऐसी थी उनकी अविचल प्रेम निष्ठा।

विधि की विडंबना—बंदरिया कुछ दिन पीछे बीमार पड़ी, बंदर ने उसकी दिन-दिन भर भूखे-प्यासे रहकर सेवा-सुश्रूषा की पर बंदरिया बच न सकी, मर गई। बंदर के जीवन में मानो वज्राघात हो गया। वह गुमसुम जीवन बिताने लगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इतर प्राणियों में विधुर विवाह पर प्रायः किसी में भी प्रतिबंध नहीं है। एक साथी के न रहने पर नर हो या मादा अपने दूसरे साथी का चुनाव खुशी-खुशी कर लेते हैं। इस बंदर दल में कई अच्छी बंदरियाँ थीं। बंदर हृष्ट-पुष्ट था। किसी नई बंदरियों को मित्र चुन सकता था। पर उसके अंतःकरण का प्रेम स्वार्थ और कपटपूर्ण नहीं था। पता नहीं, शायद उसे आत्मा के अमरत्व, परलोक, पुनर्जन्म पर विश्वास था, इसलिए उसने फिर किसी बंदरिया से विवाह नहीं किया।

आत्मा जिस धातु की बनी है वह प्रेम के प्रकाश से ही जीवित रहती है। प्रेमविहीन जीवन तो नरक समान लगता है। बंदर ने अपनी निष्ठा पर आँच न आने देने का संकल्प कर लिया होगा तभी तो उसने दूसरा विवाह नहीं किया, पर आत्मीयता की प्यास कैसे बुझे ? यह प्रश्न उसके अंतःकरण में उठा अवश्य होगा, तभी तो उसने कुछ दिन पीछे ही अपने जीवन की दिशा दूसरी ओर मोड़ दी। प्रेम को सेवा का रूप दे दिया उसने। अभी तक उसने अपनी प्रेयसी बंदरिया को आत्म-समर्पण किया था अब उसने हर दीन-दुःखी में आत्मा के दर्शन करने और सबको प्यार करने का सिद्धांत बना लिया, उससे ही उसे शांति मिली।

बंदर एक स्थान पर बैठा रहता। अपने कबीले या दूसरे कबीले का कोई अनाथ बंदर मिल जाता तो वह उसे प्यार करता, खाना खिलाता, भटक गए बच्चे को ठीक उसकी माँ तक पहुँचाकर आता, लड़ने वाले बंदरों को अलग-अलग कर देता। इसमें तो वह कई बार अति उग्र पक्ष को मार देता था। पर तब तक चैन न लेता जब तक उनमें मेल-जोल नहीं करा देता। उसने कितने ही वृद्ध, अपाहिज बंदरों को पाला, कितनों ही का बोझ उठाया। बंदर की इस निष्ठा ने ही अल्बर्ट श्वाइत्जर को एकांतवादी जीवन से हटाकर सेवाभावी जीवन बिताने के लिए अफ्रीका जाने की प्रेरणा दी। श्वाइत्जर बंदर की इस आत्म-निष्ठा को जीवन भर नहीं भूले।

सेन्टियागो की धनाड्य महिला श्रीमती एनन ने पारिवारिक कलह से ऊबकर जी बहलाने के लिए एक भारतीय मैना पाल ली। मैना जबसे आई तभी से उदास रहती थी। ऐनन की बुद्धि ने प्रेरणा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दी, संभव है उसे भी अकेलापन कष्ट दे रहा हो। सो दूसरे दिन एक और तोता मोल ले लिया। तोता और मैना भिन्न जाति के दो पक्षी भी पास आ जाने पर परस्पर ऐसे घुलमिल गए कि एक के बिना दूसरे को चैन ही न पड़ता।

प्रातःकाल बिना चूक मैना तोता को "नमस्ते" कहती। तोता बड़ी ही मीठी वाणी में उसके अभिवादन का कुछ कहकर उत्तर देता। पिंजड़े पास-पास कर दिए जाते। दोनों में वार्ताएँ छिड़तीं। न जाने क्या मैना कहती न जाने क्या तोता कहता, पर उनको देखकर लगता यह दोनों बहुत खुश हैं। दोनों का प्रेम प्रतिदिन प्रगाढ़ होता चला गया—चोंच से दबाकर अपनी चीज बाँटकर खाते।

कुछ ऐसा हुआ कि श्रीमती एनन की एक रिश्तेदार का तोता मर गया, वे जिद करके उसे माँग ले गयीं। ठीक उसी दिन मैना बीमार पड़ गई और चौथे दिन सायंकाल ५ बजे उसने नश्वर देह त्याग दी। तोता कृतघ्न नहीं था। वह बंदी था। चला तो गया, पर आत्मा को बंदी बनाना किसके लिए संभव है। वह भी मैना की याद में बीमार पड़ गया और चौथे दिन सायंकाल ५ बजे उसने अपने प्राण त्याग दिए। पता नहीं दोनों की आत्माएँ परलोक में कहीं मिलीं या नहीं, पर इस घटना ने श्रीमती एनन का स्वभाव ही बदल दिया। अब उनके स्वभाव में सेवा और मधुरता का ऐसा प्रवाह फूटा कि वर्षों से पारिवारिक कलह में जलता हुआ दांपत्य सुख फिर खिल उठा। पति-पत्नी में कुछ ऐसी घनिष्ठता हुई कि मानो उनके अंतःकरण में तोता और मैना की आत्मा ही साक्षात् उतर आई हों। उनकी मृत्यु भी वियोगजन्य परिस्थितियों में एक दिन ही, एक ही समय पर हुई।

तोता, मैना, बंदर छोटे-छोटे सौम्य स्वभाव जीवों की कौन कहे, प्रेम की प्यास तो भयंकर खूँख्वार जानवरों के हृदयों में भी होती है। एफ. कुवियर के एक मित्र को भेड़िया पालने की सूझी। कहीं से एक बच्चा भेड़िया मिल गया। उसे वह अपने साथ रखने लगे। भेड़िया कुछ ही दिनों में उनसे ऐसा घुल-मिल गया मानो उनकी मैत्री इस जन्म की ही नहीं, कई जन्मों की हो।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ ऐसा हुआ कि एक बार उन सज्जन को किसी काम से बाहर जाना पड़ गया। वह भेड़िया एक चिड़ियाघर को दे गए। भेड़िया चिड़ियाघर आ गया, पर अपने मित्र की याद में दुःखी रहने लगा। मनुष्य का जन्म-जात बैरी मनुष्य के प्रेम के लिए पीड़ित हो यह देखकर चिड़ियाघर के कर्मचारी बड़े विस्मित हुए। कोई भारतीय दार्शनिक उनके पास होता और आत्मा की सार्वभौमिक एकता का तत्वदर्शन उन्हें समझाता तो संभव था, ये भी जीवन को एक नई आध्यात्मिक दिशा में देखने में समर्थ होते। उनका विस्मय चर्चा का विषय बनकर रह गया।

भेड़िए ने अपनी आत्मीयता की भूख शांत करने के लिए दूसरे जीवों की ओर दृष्टि डाली। कुत्ता—भेड़िया का नंबर एक का शत्रु होता है, पर आत्मा किसका मित्र, किसका शत्रु। क्या तो वह कुत्ता और क्या भेड़िया कर्मवश भ्रमित अग-जग आत्मा से एक है। यदि यह तथ्य संसार जान जाए तो फिर क्यों लोगों में झगड़े हों, क्यों मन-मुटाव, दंगे-फसाद, भेदभाव, उत्पीड़न और दूसरे से घृणा हो। विपरीत परिस्थितियों में भी प्रेम जैसी स्वर्गीय सुख की अनूभूति आत्मदर्शी के लिए ही संभव है, इस घटना का सार-संक्षेप भी यही है। भेड़िया अब कुत्ते का प्रेमी बन गया। उसके बीमार जीवन में भी एक नई चेतना आ गई। प्रेम की शक्ति कितनी वरदायक है कि वह निर्बल और अशक्तों में भी प्राण की गंगोत्री पैदा कर देता है।

दो वर्ष पीछे मालिक लौटा। घर आकर वह चिड़ियाघर गया। अभी वह वहाँ के अधिकारी से बातचीत कर ही रहा था कि उसका स्वर सुनकर भेड़िया भागा चला आया और उसके शरीर से शरीर जोड़ खूब प्यार जताता रहा। कुछ दिन फिर ऐसे ही मैत्रीपूर्ण जीवन बीता।

कुछ दिन बाद उसे फिर जाना पड़ा। भेड़िये के जीवन में लगता है भटकाव ही लिखा था। फिर उस कुत्ते के पास जाकर उसने अपनी पीड़ा शांत की। इस बार मालिक थोड़ा जल्दी आ गया। भेड़िया इस बार उससे दूने उत्साह से मिला। पर उसका स्वर शिकायत भरा था। बेचारे को क्या पता था कि मनुष्य ने अपनी जिंदगी ऐसी व्यस्त जटिल सांसारिकता से जकड़ दी है कि उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आत्मीय-भावनाओं की ओर दृष्टिपात और हृदयंगम करने की सूझती ही नहीं। मनुष्य की यह कमजोरी दूर हो गई होती तो आज संसार कितना सुखी और स्वर्गीय परिस्थितियों से आच्छादित दिखाई देता।

कुछ दिन दोनों बहुत प्रेमपूर्वक साथ-साथ रहे। एक-दूसरे को चाटते, थपथपाते, हिलते-मिलते, खाते-पीते रहे और इसी बीच एक दिन उसके मालिक को फिर बाहर जाना पड़ा। इस बार भेड़िए ने किसी से न दोस्ती की, न कुछ खाया-पीया। उसी दिन से बीमार पड़ गया और प्रेम के लिए तड़प-तड़प कर अपनी इहलीला समाप्त कर दी। उसके समीपवर्ती लोगों के लिए भेड़िया उदाहरण बन गया। वे जब कभी अमानवीय कार्य करते तो भेड़िये की याद आती और उनके सिर लाज से झुक जाते।

बर्लिन की एक सर्कस कंपनी में बाघ था। नीरो उसका नाम था। इस बाघ को लीपिजिग के एक चिड़ियाघर से खरीदा गया था। जिन दिनों बाघ चिड़ियाघर में था, उसकी मैत्री चिड़ियाघर के एक नौकर से हो गई। बाघ उस मैत्री के कारण अपने हिंसक स्वभाव तक को भूल गया।

पीछे वह क्लारा हलिपट नामक एक हिंसक जीवों की प्रशिक्षिका को सौंप दिया गया। एक दिन बाघ प्रदर्शन से लौट रहा था तभी एक व्यक्ति निहत्था आगे बढ़ा—बाघ ने उसे देखा और घेरा तोड़कर बाहर निकला। भयभीत दर्शक और सर्कस वाले इधर-उधर भागने लगे। स्वयं क्लारा हलपिट तक यह देखकर दंग रह गई कि बाघ अपने पुराने मित्र के पास पहुँचकर उसे चाट रहा और प्रेम जता रहा है। मानव-मित्र ने उसकी पीठ खूब थपथपाई, प्यार किया और कहा, अब जाओ समय हो गया। बाघ चाहता तो उसे खा जाता, भाग निकलता। पर आत्मीयता के बंधनों में जकड़ा हुआ बेचारा बाघ अपने मित्र की बात मानने को बाध्य हो गया। लोग कहने लगे सचमुच आत्मीयता की ही शक्ति ऐसी है जो हिंसक को भी मृदु, शत्रु को भी मित्र और संताप से जलते हुए संसार सागर को हिम खंड की तरह शीतल और पवित्र कर सकती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सृष्टि का हर प्राणी, हर जीव-जंतु स्वभाव में एक-दूसरे से भिन्न है। कुछ अच्छे, कुछ बुरे गुण सब में पाए जाते हैं, पर आत्मीय सद्भावना और प्रेम की प्यास से वंचित कोई एक भी जीव सृष्टि में दिखाई नहीं देता। मनुष्य जीवन का तो संपूर्ण सुख और स्वर्ग ही प्रेम है। प्रेम जैसी सत्ता को पाकर भी मनुष्य अपने को दीन-हीन अनुभव करे तो यही मानना पड़ता है कि मनुष्य ने जीवन के यथार्थ अर्थ को जाना ही नहीं।

अमरीका के मध्य भाग में पाई जाने वाली एक छिपकली के सिर पर अनेक सींग होते हैं। यह माँसाहारी जंतु क्रोध की स्थिति में होता है तो उसकी आँखों में रक्त उतर आता है, फिर वह शत्रु पर कैसा भी भयंकर आक्रमण करने से नहीं चूकती। इसका सारा जीवन ही चींटियों, गिराड़ों को मारने खाने में बीतता है। पर अपनी प्रेयसी के प्रति उसकी करुणा देखते ही बनती है। उसके लिए तो वह गिलहरी और खरगोश की तरह दीन बन जाती है।

बिच्छू बड़ा क्षुद्र जंतु है, किंतु आत्मीयता की प्यास से मुक्त वह भी नहीं। वह अपने बच्चों से इतना प्यार करती है कि उन्हें, जब तक वे पूर्ण नहीं हो जाते पीठ पर चढ़ाए घूमती है। भालू खूँख्वार जानवर है, वह भूखा नहीं रह सकता, पर जब कभी मादा भालू बच्चे देगी तो जब तक बच्चों की आँखें नहीं खुल जाएँगी वह उनके पास ही बैठी भूख-प्यास भूलकर उन्हें चूमती चाटती रहेगी।

चींटियों के जीवन में सामान्यतः मजदूर चींटियों में कोई विलक्षणता नहीं होती, उनमें अपनी बुद्धि, अपनी निजी कोई इच्छा भी नहीं होती। एक नियम व्यवस्था के अंतर्गत जीती रहती हैं, तथापि आत्मीयता की आकांक्षा उनमें भी होती है और वे अपने उस कोमल भाव को दबा नहीं सकतीं। इस अंतरंग भाव की पूर्ति वे किसी और तरह से करती हैं। वह तितली के बच्चे से ही प्रेम करके अपनी आंतरिक प्यास बुझाती हैं। यद्यपि यह सब एक प्राकृतिक प्रेरणा जैसा लगता है पर मूलभूत भावना का उभार स्पष्ट समझ में आता है। तितलियाँ फूलों का मधु चूसती रहती हैं, उससे उनके जो बच्चे होते हैं उनकी देह भी मीठी होती है। माता-पिता के स्थूल शारीरिक गुण बच्चें पर आते हैं। यह एक प्राकृतिक नियम है। तितली के नन्हें बच्चे,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिसे लार्वा कहते हैं, मजदूर चींटी सावधानी से उठा ले जाती है, उसके शरीर के मीठे वाले अंग को चाट-चाटकर चींटी अपने परिवार के लिए मधु एकत्र कर लेती है, पर ऐसा करते-करते हुए स्पष्ट-सा पता चलता रहता है कि यह एक स्वार्थपूर्ण कार्य है इससे नन्हें से लार्वे को कष्ट पहुँचता है इसलिए वह थोड़ी मिठास एकत्र कर लेने के तुरंत बाद उस बच्चे को परिचर्या भवन में ले जाती है और उसकी तब तक सेवा-सुश्रूषा करती रहती है जब तक लार्वा बढ़कर अच्छी तितली नहीं बन जाता। तितली बन जाने पर चींटी उसे हार्दिक स्वागत के साथ घर से विदा कर देती हैं। जीव-शास्त्रियों के लिए चींटी और तितली की यह प्रगाढ़ मैत्री गूढ़ रहस्य बनी हुई है। उसकी मूल प्रेरणा अंतःकरण का वह प्यार ही है जिसके लिए आत्माएँ जीवन भर प्यासी इधर-उधर भटकती रहती हैं।

आस्ट्रेलिया में फैलेंजर्स नामक गिलहरी की शक्ल का एक जीव पाया जाता है। इसे सुगर स्क्वैरेल भी कहते हैं। यह एक लड़ाकू और उग्र स्वभाव वाला जीव है, तो भी अपने बच्चों और परिवारीय जनों के प्रति उसकी ममता देखते ही बनती है। वह जहाँ भी जाती है अपनी एक विशेष थैली में बच्चों को टिकाये रहती है और थोड़ी-थोड़ी देर में उन्हें चाटती और सहलाती रहती है, मानो वह अपने अंतःकरण की प्रेम भावनाओं के उद्रेक को सँभाल सकने में असमर्थ हो जाती हो। जीव-जंतुओं का यह प्रेम-प्रदर्शन यद्यपि एक छोटी सीमा तक अपने बच्चों के कुटुंब तक ही सीमित रहता है तथापि वह इस बात का प्रमाण है कि प्रेम जीव मात्र की अंतरंग आकांक्षा है। मनुष्य अपने प्रेम की परिधि अधिक विस्तृत कर सकता है। इसलिए कि वह अधिक संवेदनशील और कोमल भावनाओं वाला है। अन्य जीवों का प्यार पूर्णतया संतुष्ट नहीं हो पाता इसलिए वे अपेक्षाकृत अधिक कठोर, स्वार्थी खूँख्वार से जान पड़ते हैं, पर इसमें संदेह नहीं कि यदि उनके अंतःकरण में छिपे प्रेम-भाव से तादात्म्य किया जा सके तो उन हिंसक व मूर्ख जंतुओं में भी प्रकृति का अगाध सौंदर्य देखने को मिल सकता है। भगवान शिव सर्पों को गले में लटकाए रहते हैं, महर्षि रमण के आश्रम में बंदर, मोर और गिलहरी ही नहीं सर्प, भेड़िए आदि तक अपने पारिवारिक झगड़े तय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कराने आया करते थे। सारा 'अरुणाचलम्' पर्वत उनका घर था और उसमें निवास करने वाले सभी जंतु उनके बंधु-बांधव, सुहृद-सखा, पड़ौसी थे। स्वामी रामतीर्थ हिमालय में जहाँ रहते, वहाँ शेर, चीते, प्रायः उनके दर्शनों को आया करते और उनके समीप बैठकर घंटों विश्राम किया करते थे। यह उदाहरण इस बात के प्रमाण हैं कि हमारा प्रेमभाव विस्तृत हो सके तो हम अपने को विराट् विश्व परिवार के सदस्य होने का गौरव प्राप्त कर एक ऐसी आनंद निर्झरिणी में प्रवाहित होने का आनंद लूट सकते हैं, जिसके आगे संसार के सारे सुख-वैभव फीके पड़ जाएँ।

६०० वर्ष पूर्व की घटना है। रोम में एक महिला अपने बच्चे से खेल रही थी। वह कभी उसे कपड़े पहनाती, कभी दूध पिलाती, इधर-उधर के काम करके फिर बच्चे के पास आकर उसे चूमती, चाटती और अपने काम में लग जाती। प्रेम भावनाओं से जीवन की थकान मिटती है। लगता है अपने काम की थकावट दूर करने के लिए उसे बार-बार बच्चे से प्यार जताना आवश्यक हो जाता था। घर के सामने एक ऊँचा टावर था उसमें बैठा हुआ एक बंदर यह सब बड़ी देर से, बड़े ध्यान से देख रहा था। स्त्री जैसे ही कुछ क्षण के लिए अलग हुई बंदर लपका और उस बच्चे को उठा ले गया। लोगों ने भागदौड़ मचाई, तब तक बंदर सावधानी के साथ बच्चे को लेकर उसी टावर पर चढ़ गया।

जैसे-जैसे उसने माँ को बच्चे से प्यार करते देखा था स्वयं भी बच्चे के साथ वैसा ही व्यवहार करने लगता। कभी उसे चूमता-चाटता तो कभी उसके कपड़े उतारकर फिर से पहनाता। इधर वह अपने प्रेम की प्यास बुझा रहा था उधर उसकी माँ और घर वाले तड़प रहे थे। बिलख-बिलखकर रो रहे थे। बच्चे की माँ तो एकटक उसी टावर की ओर देखती हुई बुरी तरह चीखकर रो रही थी।

बंदर ने यह सब देखा। संभवतः उसने सारी स्थिति भी समझ ली इसलिए एक हाथ से बच्चे को छाती से चिपका लिया शेष तीन हाथ-पाँवों की मदद से वह बड़ी सावधानी से नीचे उतरा और बिना किसी भय अथवा संकोच के उस स्त्री के पास तक गया और बच्चे को उसके हाथों में सौंप दिया। यह कौतुक लोग स्तब्ध खड़े देख रहे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

थे। साथ-साथ एक कटु सत्य कि किस तरह बंदर जैसा चंचल प्राणी प्रेम के प्रति इस तरह गंभीर और आस्थावान हो सकता है। माँ के हाथ में बच्चा पहुँचा। सब लोग देखने लगे उसे कहीं कोई चोट तो नहीं आई। इसी बीच बंदर वहाँ से कहाँ गया, किधर चला गया यह आज तक किसी ने नहीं जाना।

पीछे जब लोगों का ध्यान उधर गया तो सबने यह माना कि बंदर या तो कोई दैवी शक्ति थी जो प्रेम की वात्सल्य महत्ता दर्शाने आई थी अथवा वह प्रेम से बिछुड़ी हुई कोई और आत्मा थी जो अपनी प्यास को एक क्षणिक तृप्ति देने आई। उस बंदर की याद में एक अखंड-दीप जलाकर उस टावर में रखा गया। इस टावर का नाम भी उसकी यादगार में बंदर टावर (मंकी टावर) रखा गया। कहते हैं, ६०० वर्ष हुए, यह दीपक आज भी जल रहा है। दीपक के ६०० वर्ष से चमत्कारिक रूप में जलते रहने में कितनी सत्यता है, हम नहीं जानते। पर यह सत्य है कि बंदर के अंतःकरण में बच्चे के प्रति प्रसूत प्यार का प्रकाश जब तक यह टावर खड़ा रहेगा, लाखों लागों को मानव जीवन की इस परम उदात्त ईश्वरीय प्रेरणा की ओर आकर्षित करता रहेगा।

सद्भावनाओं का, प्रेम पूर्ण अंतःकरण का, मनुष्यों पर ही नहीं, पशुओं पर भी प्रभाव पड़ता है, इस तथ्य को प्रतिपादित करने में इंग्लैंड के एक सामान्य व्यक्ति ने न केवल तर्क प्रस्तुत किए, वरन् प्रामाणिकता की प्रतिमा बनकर स्वयं ही खड़ा हो गया। उसने न केवल सामान्य पशुओं पर प्रेम की प्रतिक्रिया का प्रदर्शन किया वरन् यह भी साबित कर दिया कि खूँख्वार, उद्दंड और जंगली जानवरों को सभ्य और मृदुल बनाया जा सकता है। इस व्यक्ति का नाम है—जान सोलेमन रेरी।

उसके पिता ओहियो प्रदेश के फ्रेंकलिन गाँव में रहते थे। नाम था एडम रेरी। उन्होंने एक घोड़ा खरीदा। घोड़ा जितना शानदार था, उतना ही सस्ता भी। एडम ने सोचा इसे सधा लेंगे। पर था वह बहुत ही खूँख्वार। उसे सिखाने सधाने के लिए दूर-दूर से क्रमशः एक दर्जन से भी अधिक घुड़सवार बुलाए गए पर वे सभी असफल रहे। घोड़ा किसी के काबू में न आया। एडम ने स्वयं उसे काबू में लाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की कोशिश की और कोड़े मारे। क्रुद्ध घोड़े ने रस्सों से बँधे होते हुए भी उन्हें ऐसा पछाड़ा कि टाँग टूट गई। उन्हें अस्पताल भिजवाया गया। घोड़ा छूट निकला। उसे खतरनाक समझकर पुलिस द्वारा उसे मरवा देने का निश्चय किया।

बालक जान रेरी उन दिनों सिर्फ १२ वर्ष का था। उसने सारी स्थिति समझी और सीधा उस जंगल में चला गया जहाँ घोड़ा चौकड़ियाँ भर रहा था। लोगों को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ जब उन्होंने देखा कि लड़का बिना लगाम और जीन के उस घोड़े की पीठ पर बैठा हुआ घर आ रहा है। पूछने पर उसने बताया यह कोई जादू नहीं है। मुहब्बत यदि गहरी और सच्ची हो तो किसी को भी यहाँ तक कि खूँख्वार पशुओं को भी वशवर्ती बनाया जा सकता है।

बालक की ख्याति घोड़ों के शिक्षक के रूप में फैल गई। लोग अपने-अपने उद्दंड घोड़े ठीक कराने उसके पास लाने लगे। सिलसिला घोड़ों का चल पड़ा तो उसने वही काम हाथ में ले लिया। कई वर्ष तक उसे यही काम करना पड़ा। बीस वर्ष का होते-होते वह सरकस के लिए घोड़े सधाने की कला में निष्णांत हो गया। उसने उन्हें ऐसे-ऐसे विचित्र खेल सिखाए जो उससे पहले सरकसों में कहीं भी नहीं दिखाए जाते थे। इससे पहले घोड़े सधाने की कला उन्हें पीटने, भूखा रखने, पैरों में कीलें ठोंकने जैसे निर्दय तरीकों पर अवलंबित थी। रेरी ने सिद्ध किया कि उससे कहीं अधिक कारगर प्यार-मुहब्बत का तरीका है। वह कहता था कि यदि जानवरों को प्यार मिले तो न केवल पालतू प्रकृति के पशु वरन् नितांत जंगली और मनुष्य से सर्वथा अपरिचित जानवर भी वशवर्ती, सहयोगी एवं सरल प्रकृति के बन सकते हैं। यह उसने सिर्फ कहा ही नहीं वरन् करके भी दिखाया।

जब घोड़े ही उसके पल्ले बँधने लगे तो उसने उनकी आदतें समझने के लिए कई महीने जंगी घोड़ों के साथ रहने की व्यवस्था बनाई। उनकी रुचि और प्रकृति को समझा। उन्हें बदलने एवं सधाने के आधार ढूँढ़े और अपने विषय में पारंगत हो गया। रेरी ने चुनौती दी कि कोई कितना ही भयंकर घोड़ा क्यों न हो वह उसे कुछ ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दिनों में, कुछ ही घंटों में वशवर्ती बना सकता है। पत्रों में छपी इस चुनौती ने घोड़े वालों में भारी दिलचस्पी पैदा कर दी। अब से लगभग १२५ वर्ष पूर्व घोड़े ही युद्ध और यातायात के प्रमुख माध्यम थे। मोटरें तो तब थी नहीं। बड़े लोग घोड़े ही पालते थे, कृषि और वाहन प्रयोजनों के लिए उन्हें ही काम में लाया जाता था। अस्तु बड़े किंतु बिगड़े घोड़ों की संख्या भी कम नहीं थी। वे मालिकों के लिए सिर दर्द बने हुए थे। कीमती होने के कारण उन्हें न मारा जा सकता था और न भगाया जा सकता था। खरीदता उन्हें कोई था नहीं। उन पर जो खर्च पड़ता था वह तो बेकार था ही। साथ ही जान जोखिम की आशंका भी बनी रहती थी। ऐसे घोड़े आए दिन रेरी के पास आते और उन्हें अनुशासित बना दिया जाता।

छपी चुनौती से प्रभावित होकर लार्ड डारचेस्टर ने रेरी का द्वार खटखटाया। उन्होंने ५ हजार डालर में एक बलिष्ठ घोड़ा—घुड़दौड़ में बाजी जीतने की दृष्टि से खरीदा था। कुछ दिन तक तो वह ठीक रहा पर पीछे वह बेकाबू हो गया। लोहे की जंजीरें तोड़ देता, जंगले उखाड़ देता और कभी-कभी गुस्से से अपनी ही अगली टाँगें काट लेता। उसके लिए ईंटों की काल कोठरी बनानी पड़ी। उसी में चारा-दाना दिया जाता। पूरे चार वर्ष उसे उसी कोठरी में बंद रहते हो गए थे। ढेरों खर्चीले उपाय कर लिए गए थे पर वह किसी तरह काबू में नहीं आया। उसे अंधा बनाने की बात सोची जा रही थी ताकि कम खतरनाक हो जाए और उसे दौड़ाने में काम लाया जा सके। नाम था उसका क्रूजर।

लार्ड डारचेस्टर ने उस घोड़े को ठीक करने की चुनौती दी। रेरी ने उसे स्वीकार कर लिया। घोड़ा लंदन तो आ नहीं सकता इसलिए उसे ही यूरेल्स ग्रीन पहुँचना पड़ा। उस समय घोड़ा अत्यंत क्रुद्ध था। कोठरी के दरवाजे तोड़ने में लगा हुआ था। उसकी भयंकर स्थिति देखकर लोगों ने समझाया कि वह इसे सुधारने के झंझट में न पड़ें और वापस चला जाए। पर रेरी अपनी बात पर अड़ा ही रहा। उसे विश्वास था कि वह किसी भी भयंकर जानवर को, इस घोड़े को भी अनुशासित कर सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रेरी सीधा घोड़े की कोठरी में निहत्था घुस गया उसने पीठ और गरदन सहलाई और तीन घंटे तक उसके साथ बातें करते हुए दुलारता रहा। जब वह घोड़े के साथ उसकी गरदन के बाल पकड़े कोठरी से बाहर आया तो दर्शकों ने उसे जादूगर कहा, पर वह यही कहता रहा यदि प्रेम को जादू कहा जाए तो ही उसे जादूगर कहलाना मंजूर है। उसके पास कोई मंत्र-तंत्र नहीं है।

लार्ड डारचेस्टर इस सफलता पर भाव-विभोर हो गए। उन्होंने घोड़े को उपहार स्वरूप रेरी को भेंट किया और साथ ही एक बड़ी धन राशि भी दी। विदाई के अवसर पर लार्ड महोदय ने कहा, "यदि रेरी की नीति मनुष्य जाति ने अपनाई होती तो उससे ईसाई धर्म का वास्तविक उद्देश्य पूरा हो जाता।"

महारानी विक्टोरिया ने रेरी की ख्याति सुनी तो उन्होंने भी उसकी कला देखने की इच्छा प्रकट की। शाही निमंत्रण देकर उसे बुलाया गया। प्रदर्शन में रेरी के सामने एक ऐसा घोड़ा प्रस्तुत किया गया जो पहले तीन घुड़सवारों का कचूमर निकाल चुका था। रेरी उसकी कोठरी में निर्भयता पूर्वक घुस गया और सोलह मिनट बाद उस पर सवार होकर बाहर आया। दूसरे घोड़े को तो उसने दस मिनट में ही वशवर्ती कर लिया।

अब उसे एक अत्यंत खतरनाक ऐसे घोड़े का सामना करना था जिसने दो घुड़सवारों की पहले ही जान ले ली थी। रेरी घुड़साल में भीतर गया और भीतर से कुंदी बंद कर ली। साथ ही यह भी निर्देश दिया कि जब तक वह कहे नहीं तब तक कोई उसे छेड़ने या दरवाजा खोलने की कोशिश न करे।

घोड़ा अत्यधिक भयंकर था। महारानी सहित प्रतिष्ठित दर्शन रेरी के निहत्थे और एकाकी भीतर घुसने से बहुत चिंतित थे, पर वह घुसा सो घुसा ही रहा। जैसे-जैसे समय बीतता जा रहा था अधीरता बढ़ती जा रही थी, जब पूरे तीन घंटे बीत गए और भीतर से कोई हलचल सुनाई न दी तो यही समझ लिया गया कि घोड़े ने रेरी को मार डाला। निदान दरवाजा तोड़ने का आदेश हुआ। भीतर जो कुछ देखा गया उससे सभी स्तब्ध रह गए। घोड़ा फूँस के ढेर पर सोया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हुआ था और उसकी टाँग का तकिया लगाए रेरी भी खर्राटे भर रहा था। दोनों की नींद खुली। वे परम मित्र की तरह साथ-साथ अस्तबल से बाहर आए तो महारानी विक्टोरिया को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। वे यह न समझ सकीं कि इतना खूँख्वार घोड़ा किस प्रकार इतनी जल्दी इतना नम्र बन सकता है।

रेरी ने अपनी कला का प्रदर्शन टैक्सास में किया जिसमें दूर-दूर के दर्शक और पत्रकार आए थे। उसके सामने चार ऐसे घोड़े पेश किए गए जो जंजीरों से कसे रहते थे और चारों ही अपने मालिकों का खून कर चुके थे। रेरी पौन घंटे सींखचे वाली कोठरियों में अकेला उनके साथ रहा और फिर चारों को अपने साथ खुले मैदान में ले आया। उसने घोड़ों को लेटने का आदेश दिया तो बिल्ली की तरह लेट गए। दर्शकों ने भारी हर्ष ध्वनि की।

एक बार तो उसने जंगली बारहसिंगों के एक जोड़े को पालतू कुत्तों जैसा बना लिया और वह उन्हें साथ लेकर प्रेम, दया और आत्मीयता के इस प्रत्यक्ष प्रभाव का प्रदर्शन करता हुआ गाँव-गाँव घूमा।

यों लोग उसे घोड़ों का शिक्षक या जादूगर भर मानते थे, पर वस्तुतः वह प्रेम का प्रयोक्ता मात्र था। जो कुछ उसने किया वह सिर्फ इसलिए कि सर्व साधारण को आत्मीयता की शक्ति का थोड़ा-सा आभास मिल सके। इस महान मंतव्य की शिक्षा देने के लिए वह देश-देश में घूमा और उसने सर्व साधारण को यही समझाया कि यदि प्रेम और करुणा की नीति को अपनाया जा सके तो न केवल सच्चे अर्थों में धर्मात्मा बना जा सकता है वरन् पारस्परिक विग्रह की समस्त समस्याओं को देखते-देखते सुलझाया जा सकता है।

रेरी अपने मिशन का प्रचार करने के लिए स्वीडन, एशिया, मिश्र, फ्रांस, रूस, अमरीका आदि अनेक देशों में गया और उसने वहाँ घोड़ों पर किए गए अपने प्रयोगों की चर्चा करते हुए प्रेम के परिणाम को जानने और उसे व्यवहारिक जीवन में अधिकाधिक मात्रा में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयुक्त करने की प्रेरणा दी। वह जहाँ भी गया, जनता ने उसका भरपूर स्वागत किया।

फ्रांस सरकार ने उसके कर्त्तव्य की शोध करने और उसका निष्कर्ष निकालने के लिए एक आयोग नियुक्त किया। अमरीका के राष्ट्रपति बुकेनन ने उसकी शिक्षा पद्धति के नोट्स लेकर ऐसी पुस्तक लिखाई जिससे घोड़ों को सिखाने-सधाने में सहायता मिले। अश्व विज्ञान की वह पुस्तक अब भी बड़ी प्रामाणिक मानी जाती है।

राल्फ एमर्सन ने कहा था, प्रेम की महत्ता के लिए विनिर्मित ईसाई धर्म के मूल सिद्धांत को रेरी ने जिस अनोखे ढंग से प्रतिपादित किया है, उससे सभ्यता के इतिहास में एक नए अध्याय का आरंभ हुआ है।

अमरीका के सैनडिगो चिड़ियाघर की निर्देशिका वेले जे. वेनशली ने चिड़ियाघर में अपने उन्नीस वर्ष के अनुभवों का जिक्र करते हुए लिखा है, मैंने वन्य पशुओं के जीवन में भी प्रेम की तड़प देखी, वे भी प्रेम से ही सीखते सिखाते हैं। एक बार चिड़ियाघर की मादा भालू ने एक बच्चे को जन्म दिया, उसका नाम टाकू रखा गया। भालू जितना क्रोधी प्रकृति का खूँख्वार जानवर है उससे अधिक उसमें वात्सल्य भाव देखा जा सकता है। देखने से लगता है संसार की विषम परिस्थितियों ने उसे क्रुद्ध होने पर विवश न किया होता तो भालू संसार में सबसे अधिक स्नेह और ममता वाले स्वभाव का जीव होता। मादा चार माह तक बच्चे को पेट से चिपकाए गुफा में पड़ी रही। गुफा से वह बाहर भी नहीं निकली, किंतु फिर जैसे उसे याद आया कि बच्चे के प्रति प्रेम और वात्सल्य का यह तो अर्थ नहीं कि उसके आत्म विकास को अवरुद्ध रखा जाए। मादा माँद से बाहर आई, नन्हा शिशु उसके साथ-साथ बाहर आया। मादा सीधे तालाब के पास पहुँची और पानी में उतरकर स्नान करने लगी। उसने अपने बच्चे को भी बहुतेरा पानी में उतरने को प्रेरित किया मुँह से तरह-तरह की आवाज निकाली। उससे प्रतीत होता था कि माँ उसे पानी में बुला रही है न आने के लिए उसमें गुस्सा भी है, किंतु वह अपनी प्यार भावना को भी दबा सकने में असमर्थ है। बच्चा अपनी माँ के साथ खिलवाड़ करता है कभी-कभी किनारे पहुँचकर उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बाल पकड़कर बाहर खींचता है मानों वह माँ को पानी में नहीं रहने देना चाहता। पर माँ जानती है कि आरोग्य के लिए बच्चे को स्नान कराना आवश्यक है। ममतावश उसने कई बार बच्चे को छोड़ा पर उसे गुस्सा भी दिखाना पड़ा। वह नाराजी भी प्रेम का एक अंग थी, भगवान भी तो नाराज होकर अपनी बनाई सृष्टि में अपने बच्चों को दंड देता है, पर उसकी दंड प्रक्रिया भी उसके प्रेम का ही प्रतीक है। खराब से खराब सृष्टि को भी वह नष्ट नहीं करना चाहता। उसे सुधार की आशा रहती है इसलिए वह अपनी उस साधना को न बंद करते हुए भी अपनी संतान पर प्यार रखना नहीं भूलता। स्वयं भी रोता रहता है, पर नाराज होकर सृष्टि को नष्ट कर डालने की बात उसके मन में कभी नहीं आई।

एक दिन मादा ने जबरदस्ती की और उसे पानी में पकड़ ही तो ले गई। उसने अपने पंजों से बच्चे को अच्छी तरह धोकर स्नान कराया। कभी वह डूबने लगा तो माँ उसे सतह से ऊपर उठा देती। धीरे-धीरे शिशु का संशय दूर हो गया और वह अपनी माँ के साथ अच्छी तरह तैरना सीख गया।

आत्मीयता का परिष्कार पेड़-पौधों से भी प्यार—

संभव है संसार के किसी और भाग में थी अब ऐसे गुलाब के पौधे हों जिनमें काँटे न हों, कुमुदिनी हो पर दिन में भी खिलती हो, अखरोट के वृक्ष हों और ३२ वर्ष की अपेक्षा १६ वर्ष में ही अपनी सामान्य ऊँचाई से भी बड़े होकर अच्छे फल देने लगते हों। पर वे होंगे अमेरिका के केलिफोर्नियाँ में विशेष रूप से तैयार किए गए पौधों की ही संतान। केलिफोर्नियाँ में यह पौधे किसी वनस्पति शास्त्री या किसी शोध संस्थान द्वारा तैयार नहीं किए गए। उसका श्रेय एक अमेरिकन संत लूथर बरबैंक को है, जिन्होंने अपने संपूर्ण जीवन में प्रेम योग का अभ्यास किया और यह सिद्ध कर दिया कि प्रेम से प्रकृति के अटल सिद्धांतों को भी परिवर्तित किया जा सकता है। यह पौधे केलिफोर्नियाँ का लूथर का यह बगीचा उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

एक बार एक सज्जन इस बाग से एक बिना काँटों वाला 'सेहुँड़' लेने गए ताकि वे अपने खेत के किनारे-किनारे थूहड़ के रूप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में रोप सकें। अमरीका क्या सारी दुनियाँभर में संभवत यही वह स्थान था जहाँ सेहुँड़ बिना काँटों के थे। बाग का माली खुरपी लेकर डाल काटने चला तो दूर से ही लूथर बरबैंक ने मना किया बोले, आप से काटते नहीं बनेगा लाओ, मैं काट देता हूँ। यह कहकर खुरपी उन्होंने अपने हाथ में ली और बोले, माना कि यह पौधे हैं, इनमें जीवन के लक्षण प्रतीत नहीं होते तथापि यह भी आत्मा हैं और प्रत्येक आत्मा प्रेम की प्यासी, भावनाओं की भूखी होती है। हम संसार को कुछ दे नहीं सकते, तो प्रेम और करुणाशील भावनाएँ तो प्रदान कर ही सकते हैं। कदाचित मनुष्य इतना सीख जाए तो संसार के सुख-शांति का वारापार न रहे।

बरबैंक सेहुँड़ के पास बैठकर खुरपी से सेहुँड़ की डाल काटते जाते थे। उनकी उस क्रिया में भी कितनी आत्मीयता और ममत्व झलकता था यह देखते ही बनता था। जैसे कोई माँ अपने बच्चे को कई बार दंड भी देती है, पर परोक्ष में उसका हित और मंगल भाव ही उसके हृदय में भरा रहता है, वैसे ही श्री बरबैंक सेहुँड़ को काटते जाते और भावनाओं का एक सशक्त स्पंदन भी प्रसारित कर रहे थे, ऐ पौधे ! तुम यह न समझना कि हम तुम्हें काटकर अलग कर रहे हैं। हम तो तुम्हारे और अधिक विस्तार की कामना से विदा कर रहे हैं यहाँ से चले जाने के बाद भी तुम मुझसे अलग नहीं होंगे। तुम मेरे नाम के साथ जुड़े हो तुम मेरी आत्मा के अंग हो। माना लोक-कल्याण के लिए तुम्हें यहाँ से दूर जाना पड़ रहा है, पर तुम मेरे जीवन का अभिन्न अंग हो। जहाँ भी रहोगे, हम तुम्हें अपने समीप ही अनुभव करेंगे, ऐसी भावनाओं के साथ बरबैंक ने सेहुँड़ की दो-तीन डालें काट दीं और आगंतुक उन्हें ले गया। इस तरह इस बाग की सैकड़ों पौध सारी दुनियाँ में फैलीं और बरबैंक के नाम से विख्यात होती गईं।

यह कोई गल्प कथा नहीं, वरन् एक ऐसा तथ्य है कि जिसने सारे योरोप के वैज्ञानिकों को यह सोचने के लिए विवश कर दिया कि क्या सचमुच ही भावनाओं के द्वारा पदार्थ के वैज्ञानिक नियम भी परिवर्तित हो सकते हैं ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिस तरह भारतवर्ष में इन दिनों नेहरू गुलाब, शास्त्री गेहूँ आदि नामों से पौधे, अन्नों की विशेष नस्लें कृषि विशेषज्ञ वैज्ञानिक अनुसंधान से तैयार कर रहे हैं, उसी प्रकार बरबैंक पोटैटो (आलू) बरबैंक स्क्वैश, बरबैंक चेरी, बरबैंक रोज, बरबैंक वालनट (अखरोट) आदि सैकड़ों पौधों, फलों, सब्जियों तथा अन्नों की नस्लें बरबैंक के नाम से प्रचलित हैं। इन्हें बरबैंक ने तैयार किया यह सत्य है, पर किसी वैज्ञानिक पद्धति से नहीं, यह उससे भी अधिक सत्य है। यह सब किस प्रकार संभव हुआ उसका वर्णन स्वयं लूथर ने अपने शब्दों में 'दि ट्रेनिंग आफ ह्यूमन प्लांट' नामक पुस्तक में निम्न प्रकार लिखा है। यह पुस्तक न्यूयार्क की सेंचुरी में १९२२ में प्रकाशित हुई है। लूथर लिखते हैं—

'आत्म-चेतना के विकास के साथ मैंने अनुभव किया कि संसार का प्रत्येक परमाणु आत्मामय है। जीव-जंतु ही नहीं वृक्ष-वनस्पतियों में भी वही एक आत्मा प्रभावित हो रहा है, यह जानकर मुझे बड़ा कौतूहल हुआ। मैं वृक्षों की प्रकृति पर विचार करते-करते इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इनमें जो काँटे हैं वह इनके क्रोध और रुक्षता के संस्कार हैं। संभव है लोगों ने उन्हें सताया, कष्ट दिया, इनकी आकांक्षाओं की ओर ध्यान नहीं दिया। इसीलिए यह इतने सुंदर फूल-फल देने के साथ ही काँटे वाले भी हो गए।

यदि ऐसा है तो क्या इन्हें प्रेम और दुलार देकर सुधारा जा सकता है ? ऐसा एक कौतूहल मेरे मन में जाग्रत हुआ। मैं देखता हूँ कि सारा संसार ही प्रेम का प्यासा है। प्रेम के माध्यम से किसी के भी जीवन में परिवर्तन और अच्छाइयाँ उत्पन्न की जा सकती हैं, तो यह प्रयोग मैंने पौधों पर करना प्रारंभ किया।

गुलाब का एक छोटा पौधा लगाया। तब उसमें एक भी काँटा नहीं था। मैं उसके पास जा बैठता। मेरे अंतःकरण से भावनाओं की सशक्त तरंगें उठतीं और पास के वातावरण में विचरण करने लगतीं। मैं कहता—मेरे प्यारे गुलाब ! लोग तुमको लेने इस दृष्टि से नहीं आते कि तुम्हें कष्ट दें। वह तो तुम्हारे सौंदर्य से प्रेरित होकर आते हैं। वैसे भी तो तुम्हारी सुवास विश्व-कल्याण के लिए ही है। जब दान और संसार की प्रसन्नता के लिए उत्सर्ग होना ही तुम्हारा ध्येय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है तो फिर वह काँटे तुम क्यों उगाते हो ? तुम अपने काँटे निकालना और लोगों को अकारण कष्ट देना भी छोड़ दो, तो फिर देखना कि संसार तुम्हारा कितना सम्मान करता है। अपने स्वभाव की इस मलीनता और कठोरता को निकालकर एक बार देखो तो सही कि यह सारा संसार ही तुम्हें हाथों-हाथों उठाने के लिए तैयार है या नहीं।

गुलाब से मेरी ऐसी बातचीत प्रतिदिन होती। भावनाएँ अंतःकरण से निकलें और वह खाली चली जाएँ, तो फिर संसार में ईश्वरीय अस्तित्व को मानता ही कौन ? गुलाब धीरे-धीरे बढ़ने लगा। उसमें सुडौल डालियाँ छँटी चौड़े-चौड़े पत्ते निकले और पाव-पाव भर के हँसते इठलाते फूल भी निकलने लगे, पर उसमें क्या मजाल कि एक भी काँटा आया हो। आत्मा को आत्मा प्यार से कुछ कहे और वह उसे ठुकरा दे—ऐसा संसार में कहीं हुआ नहीं, फिर भला बेचारा नन्हा-सा पौधा ही अपवाद क्यों बनता। उसने मेरी बात सहर्ष मान ली और मुझे संतोष हुआ कि मेरे बाग का गुलाब बिना काँटों का था।

अखरोट का धीरे-धीरे बढ़ना मुझे अच्छा न लग रहा था। मैंने उसे पानी उतना ही दिया, खाद उतनी ही दी, निरायी और गुड़ाई में भी कोई अंतर नहीं आने दिया, फिर ऐसी क्या भूल हो गई, जो अखरोट ३२ वर्ष में ही बढ़ने की हठ ठान बैठा। मैंने समझा इसे भी किसी ने प्यार नहीं दिया।

मैंने उसे संबोधित कर कहा, मेरे बच्चे ! तुम्हारे लिए हमने सब जुटाया, क्या उस कर्त्तव्यपरायणता में जो तुम्हारे प्रति असीम प्यार भरा था, उसे तुम समझ नहीं सकते ? तुम मेरे बच्चे के समान हो, तुम्हें मैं अलग अस्तित्व दूँ ही कैसे ? हम तुम एक ही तो हैं। आज माना कि दो रूपों में खड़े हैं, पर एक दिन तो यह अंतर मिटेगा ही क्या हम उस आत्मीयता को अभी भी स्थायित्व प्रदान नहीं कर सकते ? तुम उगो और जल्दी उगो। ताकि संसार में अपनी ही तरह की और जो आत्माएँ हैं, उनकी कुछ सेवा कर सको।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अखरोट बढ़ने लगा और १६ वर्ष की आधी आयु में ही अच्छे-अच्छे फल देने लगा। इसी तरह कद्दू, आलू, नेक्टारीनेस, बेरीज, पापीज आदि सैकड़ों पौधों पर प्रयोग कर श्री बरबैंक ने उन्हें प्रकृति के समान गुणों वाले पौधों के रूप में विकसित कर यह दिखा दिया कि प्रेम ही आत्मा की सच्ची प्यास है। जिस प्रकार हम स्वयं औरों से प्रेम चाहते हैं, वैसे ही बिना किसी आकांक्षा के दूसरों को प्रेम लुटाने का अभ्यास करा सके होते तो आज सारा संसार ही सुधरा हुआ दिखाई देता। प्रेम का सिद्धांत ही एकमात्र वह साधन है जिससे छोटे-छोटे बच्चों से लेकर पारिवारिक जीवन और पास-पड़ौस के लोगों से लेकर सारे समाज राष्ट्र और विश्व को भी वैसा ही सुधारा-सँवारा, सँभाला जा सकता है, जैसे बरबैंक ने पेड़-पौधों को विलक्षण रूप से सँवारकर दिखा दिया।

"चारों तरफ घटाटोप छाए जंगल से हम लोग मौन चले जा रहे थे। घनी गहरी झाड़ियों और पत्ती शाखाओं से लदी लता बेलियों के बीच राह, जैसी कोई चीज नहीं थी, परंतु हमारे मार्ग दर्शक इस जंगल में ऐसे जा रहे थे मानों वर्षों से दिन में कई बार आते जाते रहे हों। इस अतल अविभाज्य मौन में जो हस्तक्षेप होते थे, वे उन जीव-जंतुओं द्वारा ही होते थे, जो मार्ग में हमारे पास से निकल जाया करते थे। इनमें कई जानवर तो बहुत खूँख्वार भी थे परंतु वे हमें देखकर कुछ नहीं करते। हमारे दर्शक नीची गर्दन किए हुए चुपचाप आगे चलते जा रहे थे। मार्ग में मिलने वाले सर्प, बिच्छू और भयानक हिंस्र जंतुओं की ओर वे आँख उठाकर भी नहीं देखते। हम उन जीव जंतुओं को देखकर भयभीत हो उठते, परंतु उनके कारण यात्रा में कोई व्यवधान नहीं होता।"

ये पंक्तियाँ हैं मिस्र के योगी पर्यटक सुग्र-अल-जहीर के यात्रा वृत्त की जो उन्होंने मंगोलिया के घने जंगलों में एक लामा गुरु के साथ संपन्न की थी। घने जंगलों में घुसते हुए भी इसलिए डर लगता है कि वहाँ रहने वाले हिंस्र जीव-जंतुओं का खतरा रहता है और मंगोलिया के उस वन में जहाँ लता-वेल, पेड़-झाड़ी से कब कौन कीड़ा, साँप टपक पड़े अथवा कौन-सा हिंसक जानवर निकलकर आक्रमण कर दे, कोई ठीक नहीं, यह यात्रा निश्चित ही रोंगटे खड़े

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर देने वाली थी, परंतु सुग्र अल-जहीर तथा उनके गुरु भाई के पास साँप पैरों में गिरकर भी चुपचाप चले गए। क्या सचमुच ऐसे खतरनाक स्थानों में जाकर और हिंसक जानवरों के बीच पहुँचकर भी सुरक्षित रहा जा सकता है ?

इस संबंध में महर्षि पंतजलि ने योगसूत्र में स्पष्ट कहा है—अहिंसा में दृढ़ स्थिति हो जाने पर उसके निकट सब प्राणियों का बैर छूट जाता है (साधन पाद ३५)। इसी कारण प्राचीन काल के महर्षि आश्रमों में गाय और सिंह, भेड़िया और बकरी एक ही स्थान पर रह लेते थे, सबमें आत्मदर्शन और किसी को किसी प्रकार कष्ट न पहुँचाने की दृढ़ स्थिति अंतःकरण में ऐसी सात्विक धारा इतने तीव्र और प्रबल वेग से प्रवाहित कर देती है कि उसके निकटवर्ती तामसी अंतःकरण भी उससे प्रभावित होकर हिंसक वृत्ति का परित्याग कर देता है। कई बार ऐसा भी होता है कि दूसरे प्राणियों के आक्रमण की अत्यंत उग्र भावना होती है, परंतु ऐसी स्थिति में भी अहिंसक व्यक्ति का कुछ नहीं बिगड़ता।

सुग्र-अल-जहीर ने अपनी पुस्तक 'सहस्र सिद्धों का मठ' में लिखा है—"हम ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते गए हमारा मार्ग और भी बीहड़ होता गया। खाई और घाटियाँ कदम-कदम पर आने लगीं। इसी समय रीछों का एक झुंड आया और हमें तीन दिशाओं से घेरकर जीभें लपलपाता खड़ा हो गया। हम सबके भयाक्रांत कंठों से अकस्मात चीखें निकल पड़ीं। वास्तव में इतने बड़े रीछ मैंने पहले कभी नहीं देखे थे।"

"हमारे मार्गदर्शक लामा ने दोनों हाथ उठाकर हमें आश्वस्त किया और हमारी ओर देखा, जैसे वे हमें हिम्मत बँधा रहे हों। फिर लामा उन भालुओं की ओर टकटकी बाँधकर देखने लगे। उनके नेत्रों से करुणा की धारा बह रही थी। चेहरे पर शांति और स्निग्धता के भाव थे। होठों पर मंद स्मिति मुस्कान थी। लामा उस समय प्रेम और शांति की प्रतिमूर्ति लग रहे थे। कुछ क्षणों तक ही उन्होंने लपलपाती जीभ वाले भालुओं की ओर देखा होगा कि वे भालू एक-एक कर तीनों ओर से हट गए तथा आस-पास की झाड़ियों में चले गए। मैं समझ नहीं पाया कि यह क्या हुआ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हालैंड निवासी एक वन संरक्षक दंपत्ति ने अपने व्यवहार से सिंह जैसी खूनी और क्रूर प्रकृति के प्राणी को स्नेह सौजन्य के बंधनों में इस प्रकार बाँधा कि वे स्वयं मृदुलता और सौजन्य की प्रतिमूर्ति बन गए। हालैंड निवासी मि. जार्ज वहाँ के नेशनल पार्क में वरिष्ठ जंतु संरक्षक के पद पर काम करते हैं। उनका निवास अधिकतर इन्हीं पशुओं के साथ रहा। मि. जार्ज एडम्सन की पत्नी का नाम था जाय एडम्सन। दोनों पति-पत्नी अधिकांशतः वन्य जीवों के साथ रहते-रहते उनसे इतने प्रेम करने लगे कि जाय एडम्सन को वनदेवी तथा एडम्सन को वन मित्र कहा जाने लगा।

जिस संरक्षित वन में वे काम करते थे, उसका नाम है सिरमनेटी। इस वन का क्षेत्रफल ४५०० वर्गमील है। वन जीवों के लिए बने इस उन्मुक्त उद्यान को देखने के लिए संसार भर से लाखों लोग लंबी यात्राएँ करके आते हैं। कुछ समय पूर्व इसमें रहने वाले वन्य जानवरों की संख्या करीब ४ लाख आँकी गई थी। एक दिन पार्क के वन रक्षक कर्मचारी को किसी सिंह ने मार डाला।

सर्वविदित है कि मनुष्य के रक्त का चस्का लग जाने के बाद सिंह प्रायः नरभक्षी हो जाते हैं। बहुत संभावना थी कि वह शेर, जिसने वन रक्षक कर्मचारी को मारा था, वह भी नरभक्षी हो जाए। जार्ज को यह काम सौंपा गया कि वे उस नरभक्षी का अंत कर डालें और उन्होंने ऐसा कर भी दिया। वह नरभक्षी सिंह मादा शेरनी थी और उसकी माँद में तीन सिंह शावक पाए गए।

जार्ज को न जाने क्या सूझी कि वे तीनों सिंह शिशुओं को ले आए और उन्हें लाकर अपनी पत्नी को भेंट किया। जाय सिंह शावकों को देखकर पहले डरी, पीछे उसने इन बच्चों को पालने का निश्चय किया। उन्हें पालते समय ही जाय के हृदय में वात्सल्य का स्रोत उमड़ पड़ा और वह उन्हें चाव-दुलार से पालने लगी। आरंभ में उन्हें दूध पीना सिखाना तक बड़ा कठिन था। मुँह में रबड़ की नली डालकर दूध पिलाया गया। कुछ ही महीनों में बच्चे उछलने-कूदने लायक हो गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तब तीन सिंह शिशुओं में से दो को तो चिड़ियाघर भेज दिया गया और एक मादा शिशु को जाय ने अपने पास ही रख लिया। उसका नाम था ऐल्सा। जाय ने ऐल्सा को अपनी पुत्री की तरह पालना, लाड़-दुलार करना आरंभ कर दिया। वे अपने हाथों से उसे भोजन करातीं, उसी के लिए बनाई गई चारपाई पर उसे सुलातीं। मच्छरों से बचाने के लिए मसहरी लगातीं। सर्दी न लग जाए इसलिए रजाई ओढ़ातीं।

ऐल्सा भी इस प्रेम व्यवहार से प्रभावित हुए बिना न रह सकी। वह अपनी इस नर शरीर धारी मौसी के हाथ-पैर चाटकर अपने ढंग से प्रेम प्रदर्शित करती। जाय की गोदी में जा बैठती और सिर खुजलाए जाने का आनंद लेती। बिल्ली की तरह वह पीछे-पीछे लगी रहती इन दोनों के प्रेम संबंध इतने सघन हो गए कि ऐल्सा जाय एडम्सन की गोदी में सिर रखकर घंटों निंद्रामग्न रहती। जाय भी कभी-कभी ऐल्सा की पीठ पर सिर रखकर चुपचाप पड़ी रहती थी।

यह स्नेह सद्भावना का ही चमत्कार था कि क्रूरता और हिंसा स्वभाव को भूलकर वह सिंह शाविका इतनी मृदुल हो गई, उसके स्वभाव में ममता और आत्मीयता के अंकुर इतने गहरे जमते गए कि उसकी भयंकरता और आक्रामकता एक दम तिरोहित हो ही गई। घर में रहते-रहते ऐल्सा बहुत-से शब्दों और इशारों का अर्थ भी समझने लगी। वह धीरे-धीरे बड़ी होने लगी। होते-होते प्रौढ़ हो गई और साथी की आवश्यकता अनुभव कर व्याकुलता प्रदर्शित करने लगी। जार्ज ने उसकी मनः स्थिति को समझकर जंगल के उस क्षेत्र में छोड़ दिया जिधर सिंह रहते थे।

यौवन गंध के आकर्षण ने उसे सिंह साथी से भी मिला दिया और फिर वह उधर ही रहने लगी। लेकिन वह अपने मायके को सर्वथा भुला न सकी। जब कभी वह एडम्सन दंपत्ति के निवास पर आ जाया करती और हफ्तों वहाँ रहती। लोग तो ऐल्सा को देखकर सहम से जाते, परंतु उसने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया और न ही कभी किसी की ओर गुर्राकर देखा ही। उन्मुक्त वातावरण में स्नेह और प्रेम द्वारा सिंह को पालते और उसकी क्रूरता निरस्त कर उसमें सौम्य स्वभाव उत्पन्न करने की कुशलता के लिए एडम्सन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दंपत्ति को सर्वत्र सराहा गया। स्नेह वात्सल्य, प्रेम, ममता और आत्मीयता ऐसे चुंबकीय गुण हैं जो किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर उसमें भी चुंबकत्व उत्पन्न कर देते हैं। फिर क्या कारण है कि अहिंसा, प्रेम तथा करुणा की धाराओं से परिपूर्ण व्यक्तित्व के संरक्षण में हिंसक पशु अपना स्वभाव न भूल सकें और शेर तथा मेमने के एक साथ रहने की बात कपोल कल्पना लगे।

आत्मीयता, करुणा और प्रेम में शक्ति ही ऐसी असीमित-अनंत है कि उसके द्वारा बड़े से बड़े चमत्कार संभव हो सकते हैं। इसमें कुछ भी आश्चर्य नहीं।

❐ ❐

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आत्मीयता का विस्तार, आत्म-जागृति की साधना

मंदिर पहाड़ की चोटी पर था। फिर भी दर्शनार्थी ऊपर जा रहे थे। "दर्शन करना अवश्य है"—इसलिए लोग बराबर चढ़ाई चढ़ते जा रहे थे। एक महात्मा जी भी थे, वह भी भगवान की मूर्ति के दर्शनों के लिए ऊँची-नीची घाटी चढ़ते जा रहे थे, पर थकावट के कारण उनका बुरा हाल था। इतनी चढ़ाई कैसे पार होगी, यह वे समझ नहीं पा रहे थे। बार-बार थककर बैठ जाते थे। भगवान के मिलन में आनंद है तो उसकी साधना में आनंद क्यों नहीं ? उनके मन में एक तर्क उठा—इस तर्क ने उनका मन ढीला कर दिया।

पीछे मुड़कर देखा तो एक आठ नौ वर्षीय बालिका भी पहाड़ की चढ़ाई चढ़ रही थी। उसकी पीठ पर दो वर्ष का एक बालक था, तो भी उनके मुख-मंडल पर थकावट का कोई चिन्ह नहीं था। हँस-मुख बालिका कभी बच्चे को थपथपाती, चूमती-चाटती और कभी नाराज-सी होकर उससे बात-चीत करती। बच्चा उसे शिकायत वाली

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मुद्रा में देखता तो बालिका कहती—"बुद्धू" और हँसती हुई फिर दुगुने उत्साह से चढ़ाई चढ़ने लगती है।

मन तो विचारों का भांडागार है, अभी थोड़ी देर पहले तर्क उठा था, अब वह कौतूहल में बदल गया। मेरे पास कोई बोझ नहीं, शरीर भी पुष्ट है फिर भी थकावट और इस नन्हीं-सी बालिका की पीठ पर सवारी है, तो भी उसके मुख पर थकावट का कोई चिन्ह नहीं। उन्होंने पूछा—बालिके ! तुम इतना बोझ लिए चल रही हो, थकावट नहीं लगी क्या ?

"बोझ नहीं है बाबा !" लड़की ने महात्मा को चिढ़ाने वाली मुद्रा बनाकर कहा—यह मेरा भाई है देखते नहीं, इसके साथ अटखेली करने में कितना आनंद आता है, यह कहकर बालिका ने शिशु के कोमल कपोल चूमे और एक नव स्फूर्ति अनुभव करती हुई फिर चढ़ाई चढ़ने लगी।

महात्मा जी ने अनुभव किया यदि भगवान को प्राप्त करने की साधना कठोर और कष्टपूर्ण लगती है तो यह दोष भगवान का नहीं, जीवन नीति का है। वस्तुतः लौकिक हो तो भी क्या ? वासना रहित और पवित्र जीवन बना रहता है तो कठिन कर्त्तव्य और कठिनाइयों से भरे जीवन में भी मस्ती का आनंद लिया जा सकता है। यही नहीं व्यक्ति के निर्माण और पूर्णता का लाभ भी इसी तरह हँसते थिरकते प्राप्त किया जा सकता है। अपने जीवन में इस सत्य की गहन अनुभूति के बाद तभी तो प्रसिद्ध वैज्ञानिक जूलियन हक्सले ने लिखा है कि व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए सौंदर्य से प्रेम, सुंदर व आश्चर्यजनक वस्तुओं के प्रति प्रेम भी आवश्यक है, क्योंकि उससे भावी जीवन में आगे बढ़ने की भावना जाग्रत होती है।

भारतीय संस्कृति में मोह और आसक्ति, वासना और फलाशा की निंदा की गई है। पर ऐसा कहीं नहीं बताया गया कि मनुष्य लौकिक कर्त्तव्यों का परित्याग करे। ईश्वर दर्शन, आत्म-साक्षात्कार स्वर्ग और सद्गति पुण्य और परमार्थ मानव-जीवन के अंतिम लक्ष्य हैं, अपूर्णता से पूर्णता की ओर तो उसे बढ़ना ही चाहिए। उसे लौकिक हितों से बढ़कर माना जाए तो भी कोई बुरा नहीं पर यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मानकर कि सांसारिक जीवन में कठिनाइयाँ ही कठिनाइयाँ, अवरोध ही अवरोध, भार ही भार हैं, उसे छोड़ना या उसे झींकते हुए जीना भी बुरा है, बुराई ही नहीं एक पाप और अज्ञान भी है, क्योंकि ऐसा करके यह रचयिता को 'अमंगल' होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। संसार में भी जो पाप विकार और ध्वंसात्मक वृत्तियाँ पनपीं वह इसी "नासमझी" का परिणाम हैं, जो वहाँ से प्रारंभ होती हैं, जहाँ से मनुष्य आत्मीय सद्भावना पराङमुख होता है। प्रेम एक शक्ति है जो उच्च आकांक्षाओं की पूर्ति करता है और यदि उसे कुपित न होने देकर जीवन में विचारों और भावनाओं के समावेश द्वारा पवित्र बनाए रखा जा सके तो पता चले कि प्रेम सृष्टि का सबसे अनोखा निर्माण है। मनुष्य तुच्छ से तुच्छ वस्तुओं तक में अपना सच्चा प्रेम आरोपित करके सुख और सद्गति प्राप्त कर सकता है।

लौकिक सुख का सच्चा आधार प्रेम है। नम्रता के साथ गर्व, धैर्य के साथ शांति, स्वार्थ के साथ आत्म-त्याग और हिंसा की भावनाओं को भी कोमलता में बदल देने की शक्ति प्रेम में है। यह इंद्रिय वासनाओं को प्रसन्नता एवं जीवन में बदल सकता है, किंतु आवश्यक है कि प्रेमी का सर्वोच्च लक्ष्य प्रेममय होता ही रहे।

प्रेमास्पद के प्राणों में अपने प्राण, अपनी इच्छा और आकांक्षाएँ घुलाकर व्यक्ति उस "अहंता" से बाहर निकल आता है, जो पाप और पतन की ओर प्रेरित कर ऐसे दिव्य मनुष्य को नष्ट करता रहता है। प्रेमी कभी यह नहीं चाहता कि मुझे कुछ मिले वरन् वह चाहता है कि अपने प्रेमी के प्रति अपनी निष्ठा कैसे प्रतिपादित हो। इसलिए वह अपनी बातें भूलकर केवल प्रेमी की इच्छाओं में मिलकर रहता है। जब हम अपने आपको दूसरों के अधिकार में डाल देंगे, तो पाप और वासना जैसी स्थिति आएगी ही क्यों और तब मनुष्य अपने जीवन-लक्ष्य से पतित ही क्यों होगा ? सच्चा प्रेम तो प्रेमी की उपेक्षा से भी रीझता है। प्रेम की तो व्याकुलता भी मानव अंतःकरण को निर्मलशांति प्रदान करती है।

मन जो इधर-उधर के विषयों और तुच्छ कामनाओं में भटकता है, प्रेम उसके लिए बाँध देने को रस्सी की तरह है। प्रेम की सुधा पिए हुए मन कभी भटक नहीं सकता, वह तो अपना सब कुछ त्याग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने को तैयार रहता है। जो समर्पित कर सकता है, पाने का सच्चा सुख तो उसे ही मिलता है। प्रेम को भोग तो क्या स्वर्ग भी आसक्त नहीं कर सकते और परमात्मा को पाने के लिए भी तो यह संतुलन आवश्यक है। प्रेम साधना द्वारा मनुष्य लौकिक जीवन का पूर्ण रसास्वादन करता हुआ पारमार्थिक लक्ष्य पूर्ण करता है। इसलिए प्रेम से बड़ी मनुष्य जीवन में और कोई उपलब्धि नहीं—

चढ़त न चातक चित कबहुँ, प्रिय पयोद के दोष।
"तुलसी" प्रेम पयोधि की, ताते माप न जोख।।

स्वांति नक्षत्र के बादल चातक के मुख पर क्या चुपचाप जल बरसा जाते हैं ? नहीं, वे गरजकर कठोर ध्वनि करते और डराते हैं। पत्थर ही नहीं कई बार तो रोष में भरकर बिजली भी गिराते हैं, वर्षा और आँधी के थपेड़े क्या कम कष्ट देते हैं ? किंतु चातक के मन में अपने प्रियतम के प्रति क्या कभी नाराजी आती है ? तुलसीदास ने बताया कि यह प्रेम की ही महिमा है कि चातक पयोद के इन दोषों में भी उसके गुण ही देखता है।

अमंगल-सी दीखने वाली भगवान की सृष्टि में न कठिनाइयों के झंझावत कम हैं, न अभाव और कष्ट-पीड़ाएँ, एक-एक पग भार है और लक्ष्य प्राप्ति का बाधक है। पर यह केवल उनके लिए है जिन्होंने आत्म-तत्व को जाना नहीं। आत्मीयता तो समुद्र की तरह अगाध है, उसमें जितने गहरे पैठा जाए उतने ही बहुमूल्य उपहार मिलते और मानव-जीवन को धन्य बनाते चले जाते हैं।

कीट्स अँग्रेजी के महान कवि ने थोड़ा-सा जीवन जिया, अभाव और कष्टों में जिया। कहते हैं कीट्स कई-कई दिन की सूखी रोटियाँ रख लिया करता था। वही जीवन निर्वाह की साधना होती थीं। ऐसी परिस्थितियों में कोई व्यक्ति यदि जी सकता है तो उसे किसी का परम प्रेमास्पद ही होना चाहिए। कीट्स के संबंध में ऐसा ही था। एक संपन्न परिवार की नवयुवती ने उसे प्रेम दिया था। वासना-रहित उस प्रेम ने ही कीट्स की भावनाओं को इतना कोमल और संवेदनशील बनाया था। २१ वर्ष की स्वल्पायु में लिखी उसकी रचनाएँ प्रौढ़ कवियों को भी मात करती चली जाती हैं और जब यही प्रेम उससे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

छिना, कीट्स की प्रेमिका का विवाह किसी धन संपन्न परिवार में कर दिया गया तो उसका यही प्रेम परमात्मा के पैरों में समर्पित हो गया। 'दि लैमेंट' नामक गीत में उसकी यह संपूर्ण भाव-विभोरता छलक उठी है और उसने 'कीट्स' को अमर बना लिया है।

महाकवि कालिदास जब तक एक भावना-विहीन व्यक्ति थे, तब उन्हें यह भी सुधि न थी कि वे जिस डाल पर बैठे हैं, उसी को काट रहे हैं, किंतु जब विद्योत्तमा के पावन प्रेम ने उसे झकझोरा तो कालिदास का संपूर्ण अंतःकरण अँगड़ाई लेकर जाग उठा। महाकवि के गीतों में भगवती सरस्वती को उतरना पड़ा।

कहते हैं कि एक बार विवाद उठ खड़ा हुआ कि कवि दंडी श्रेष्ठ हैं अथवा कालिदास। जब इसका निर्णय मानवीय-पंचायत न कर सकी तब दोनों सरस्वती के पास गए और पूछने लगे—'अंबे ! अब तुम्हीं निर्णय कर दो हम दोनों में श्रेष्ठ कौन, बड़ा है ?' भगवती ने मुस्कराते हुए कहा—'कविदंडी ! कविर्दंडी !! कवि तो दंडी ही है।'

महाकवि कालिदास ने भगवती के चरणों में अपना सर्वस्व समर्पण किया हुआ था। उन्हें यह निर्णय पक्षपातपूर्ण लगा। पूछ बैठे—"अंबे ! यदि दंडी ही कवि हैं तो फिर मैं क्या हुआ ?"

भगवती ने उसी स्नेह से कहा—"तात् ! त्वं साक्षात् सरस्वती। तुम तो साक्षात सरस्वती ही हो। हम और तुम दोनों अभिन्न हैं।" इस व्याख्यान से महाकवि का मन पश्चाताप से भर गया, उन्होंने तब जाना निःस्वार्थ प्रेम की गौरव गरिमा कितनी महान है।

महाकवि तुलसी के अंतःकरण को प्रेम ने ही जाग्रत कर ईश्वर परायण बनाया था। सूरदास तब विल्वमंगल कहे जाते थे, चिंतामणि वेश्या के प्रति निश्छल प्रेम ने ही उनकी आत्मा को झंकृत किया था। प्रेम अध्यात्म की पहली और आखिरी सीढ़ी है। उस पर चढ़कर ही व्यक्ति निराकार सत्ता पर विश्वास की अनुभूति करता है। उसी में मिलकर ही वह अमरत्व का आनंद लूटता है। प्रेम का अभ्यास जीवन में न किया हो, ऐसा एक भी अध्यात्मवादी व्यक्ति नहीं मिलेगा, क्योंकि प्रेम नहीं होगा तो वह कैसे मानेगा कि संसार का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अंतिम सत्य पदार्थों में शरीर और संपत्ति में नहीं, भावनाओं में है, उसकी ही प्यास मनुष्य को चारों ओर दौड़ाती है।

यही भाव जब विस्तृत होने लगता है तो व्यक्तित्व भी उसी क्रम से परिष्कृत होने लगता है। इसके अनेक रूप समाज के साथ हमारे संबंधों को प्रगाढ़ और मधुर बनाते हैं। छोटों से प्रेम, स्नेह, समवयस्कों से मैत्री और भ्रातृत्व, पत्नी का प्रेम राग और बड़ों से प्रेम श्रद्धा कहलाता है। यह सब प्रेम रूपी वृक्ष के शाखा, पत्तों और फूल की तरह हैं। ईश्वर के प्रति प्रेम कहलाता है, यह निष्काम और विश्वास की शक्ति से संपन्न होने के कारण महान हो जाता है और जिस अंतःकरण में प्रस्फुटित होता है, उसे भी महान, कीट्स, कालीदास सूर और तुलसी की तरह क्षुद्र से महान बना देता है।

अपने प्रति प्रेम-स्वार्थ से विश्व-प्रेम परमार्थ की ओर प्रगति करता हुआ, प्रेम-साधक ही विराट जगत में फैली आत्मा की एकता को हृदयंगम कर सकता है। उसी की ओर संकेत करते हुए गीताकार ने लिखा है—

आत्मनां सर्वभूतेषु सर्वभूतानि चात्मनिः।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शिनः।।

अर्थात्—वह योगी सभी भूत-प्राणियों में अपनी ही आत्मा समाई हुई देखता है, इसलिए सभी को समभाव से देखता हुआ, वह सभी के साथ प्रेम करता है।

जीवन की सर्वोच्च प्रेरणा आत्मा का प्रकाश ही है उसकी प्रेरणा से काम करना ही ईश्वर की इच्छा का पालन करना है। उसने आत्मीयता से ही संसार की रचना की है। एक-एक को यह ही जोड़कर रखता है और अंत में स्वयं भी उसी से जुड़ गया है। अन्य सब साधनाएँ जो ईश्वर को प्राप्त करा सकती हैं, देश, काल, स्वस्थिति के अनुसार अदल-बदल सकती है, लाभदायक भी हो सकती हैं और हानिकारक भी, किंतु आत्मीयता की साधना में कहीं भी किसी भी समय परिवर्तन की आवश्यकता नहीं।

प्रेम आत्मा को झकझोरकर जगा देता है और व्यक्ति को परमार्थवादी बनने को विवश कर देता है। प्रेम का शुद्ध अर्थ है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विश्वास। जो निराकार सत्ता में विश्वास करना सीख गया, ईश्वर उससे दूर नहीं रह सकता। आत्मा को झकझोरकर परमात्मा से मिला देने वाली इसीलिए सबसे सरल, अमर साधना प्रेम है। अध्यात्मवादी प्रेमी हुए बिना ईश्वर की ओर गमन नहीं कर सकता।

❐ ❐

साधना के सूत्र

प्रेम द्वारा उस प्रेम स्वरूप की प्राप्ति में ही जीवन की सार्थकता है। इच्छा की अंतिम चरितार्थता प्रेम में ही है। साधारण दृष्टि से देखने पर मालूम होता है कि प्रत्येक प्राणी प्रेममय है। वह किसी न किसी से प्रेम करता ही है। माँ-बाप अपने बच्चों से, पुरुष स्त्री से, मित्र-मित्र से, साथी-साथी से। कोई धन, कीर्ति, यश, भव्य भवनों से प्रेम करता है, तो कोई प्रकृति से, तो कोई ईश्वर से। तात्पर्य यह है कि सृष्टि का कार्य संचालन प्रेम के माध्यम से ही हो रहा है। इस विश्वभुवन में प्रेम उपासना प्राणी मात्र का स्वाभाविक धर्म है। इसके बिना जीवन का अस्तित्व कायम नहीं रहता।

आत्म-साधना के पथ पर बढ़ता हुआ मनुष्य जब उन्नति की ओर अग्रसर होता है तो वह अंत में उस आत्म स्वरूप के दर्शन करता है जहाँ सर्वत्र आत्म तत्व के सिवा कुछ है ही नहीं। इसे ही विश्व प्रेम भी कहते हैं। इस विश्व प्रेम की प्राप्ति कैसे हो ? इसका मर्म बहुत कम लोग जानते हैं और उनमें से भी बहुत कम इसको प्राप्त कर पाते हैं।

त्याग और प्रेम का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। "प्रेम तो बिना दिए जी नहीं सकता। "आप लीजिए मुझे नहीं चाहिए।" इस नीति से प्रेम की प्राप्ति की जा सकती है। "मैं ही लूँगा आपको नहीं दूँगा" की नीति से प्रेम स्वरूप की प्राप्ति तो दूर परस्पर का प्रेम भी समाप्त हो जाता है। उत्सर्ग पर ही, त्याग पर ही, प्रेम जीवित है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परमपिता, परमात्मा का हमसे कितना प्रेम है, उसने हमारे लिए अपने अमूल्य भंडारों को खोल रखा है। हम भी जो कुछ हमारे पास है उसे दे डालें। तन, मन, धन, योग्यता जो कुछ हो दूसरों के हित साधन के लिए समर्पित करें।

इसे देने में उत्सर्ग के मार्ग में व्यवसायिक बुद्धि को बीच में न आने दिया जाए। जो कुछ दें उसके बदले में कुछ प्राप्ति की आशा न रखें। जो अपने पास है उसे देते रहें, निस्वार्थ भाव से उत्सर्ग करते रहें। आप देखेंगे विश्व-प्रेम का स्रोत आप में उमड़ पड़ेगा। आप आनंदित हो उठेंगे। स्वयं ही नहीं सारे वातावरण को प्रेममय बना देंगे। लेने ही लेने की प्रवृत्ति में प्रेम का विकास असंभव है। लेने की प्रवृत्ति के कारण कुछ ही समय में कैकेई ने राजतिलक उत्सव को शोक में परिणत कर दिया था, किंतु उसके विपरीत राम और भरत के त्याग ने प्रेम की नई लहर बहा दी।

निस्वार्थ त्याग के पथ पर चलकर भेड़ चराने वाला बालक ईसा मसीह बन गया। त्याग के पथ का अवलंबन लेकर ही महात्मा गाँधी, सेंटपाल आदि ने जन-जन में उस प्रेम स्वरूप के दर्शन किए। निस्वार्थ त्याग ही प्रेम स्वरूप की उपलब्धि करा सकता है। अतः अपने पास जो कुछ है उसे उन्मुक्त भाव से लुटा दीजिए दूसरों के लिए। अपना सर्वस्व अर्पण कर दीजिए। आपका त्याग और निस्वार्थ भाव जितना उच्च होगा उतना ही आप में ईश्वरीय प्रेम, विश्व प्रेम का पुण्य प्रकाश प्रस्फुटित होगा, जिसके दिव्य प्रकाश से आपका जीवन धन्य बन जाएगा।

अहंकारी, अभिमानी, स्वार्थी एवं महत्त्वाकांक्षी के हृदय में विश्व प्रेम की अनुभूति नहीं हो सकती। इसलिए विश्व प्रेम के लिए अपने अहंकार को "मारना होगा"। अपने हृदय को खाली करो, मैं उसे प्रेम से भर दूँगा। इस ईश्वरीय महावाक्य में स्पष्ट संकेत है कि अहंकार को निकाल देने पर हृदय में ईश्वरीय प्रेम की प्रतिष्ठापना हो सकती है।

अहंकारी मनुष्य की शक्ति से विश्व प्रेम दूर होता है अहंकार किसका धन-दौलत, वैभव-ऐश्वर्य का ? नहीं यह सब यहीं छोड़ना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पड़ेगा। नाम, पद, प्रतिष्ठा का अहंकार है तो यह रंगीन चोला यहीं उतारना पड़ेगा। बड़े-बड़े शक्तिवान सामर्थवान इस धूल में मिल गए हैं। फिर किसका अभिमान ? अपने आपको इस अहंकार के नागपाश से विमुक्त करके अपने हृदय में विश्व प्रेम की प्रतिष्ठापना कर अपना तथा अन्य लोगों का जीवन धन्य बनाइए। अपनी नई सृष्टि बसाने की कोशिश में जीवन न खोया जाए क्योंकि वह अस्वाभाविक है, असंगत है, ईश्वरीय विधान के विपरीत है, परिणाम दुःखदायी और विनाश ही है।

संसार के प्रत्येक तत्व में भलाई-बुराई सन्निहित हैं। न कोई पूर्णतः बुरा है और न कोई भला। मनुष्य के हृदय में भी विकारों के बीच ही प्रेम की जड़ जमी हुई है। शुभ तत्व बीज रूप में सभी में स्थित हैं। ऐसी दशा में बुराइयाँ ही देखना अथवा दूषित दृष्टिकोण को अपनाकर घृणा निंदा को गले लगाना प्रेम साधना के पथ में भारी विघ्न है। अपना दृष्टिकोण बदल जाने पर जो दूषित और बुरे तत्वों में भी अच्छाई और ईश्वरीय तत्व की झाँकी दृष्टिगत होती है। वहाँ भी उस प्रेम स्वरूप के दर्शन होते हैं, क्योंकि विश्व प्रेम की प्राप्ति में कहीं दोष, बुराइयाँ रहती ही नहीं हैं घृणा, परनिंदा से प्रेम मर जाता है अतः यह दृष्टिकोण त्याज्य है। इसके विपरीत अच्छाई का दर्शन करना आवश्यक है।

प्रेम उपासना के लिए हृदय शुद्धि भी अत्यावश्यक है। अपने विकारों को समझकर यथावत् उन्हें दूर करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। इसके अतिरिक्त दूसरों के लिए अपना हृदय सदैव खुला रखना चाहिए। दुराव प्रेम साधना में बाधक है। हृदयों पर आधिपत्य किया जा सकता है। बुद्धि की दौड़ तर्क-वितर्क, चालाकी, प्रतिभा के प्रदर्शन से मित्र को भी पराया बना देती है। शुद्ध हृदय और निष्कपट व्यवहार से शत्रु को भी मित्र बनाया जा सकता है। अतः भूलकर भी चालाकी दुराव-छिपाव से काम न लेकर सबसे निष्कपट व्यवहार एवं सहृदयता के संबंध कायम करने चाहिए।

प्रेम की साधना आत्म-भावों को जोड़ने और उनके विस्तार में ही है। साधारणतया मनुष्य उन वस्तुओं से प्रेम करता है, जिन्हें वह अपनी समझता है। जो उसे अच्छी लगती है जिनसे वह प्यार करता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है। अच्छी लगने वाली वस्तुओं के मूल में वह आत्मभाव ही उनसे जुड़ा हुआ है। कोई अपने मकान संपत्ति से, कोई अपने बाल-बच्चों से, कोई अन्य चीजों से प्रेम करते हैं और दूसरों के बाल-बच्चों, धन, चीजों, मकान आदि से प्रेम नहीं करते, क्योंकि उनमें उसका आत्मभाव स्थित नहीं है, वह उन्हें अपना नहीं समझता। किसी भी वस्तु के आकर्षण में आत्मभाव जोड़ देने पर ही वह अच्छी लगती है। इसलिए विश्व प्रेम के लिए, सर्वत्र उस प्रेम स्वरूप के दर्शन के लिए, अपने आत्मभाव को चारों ओर जोड़ देना आवश्यक है।

अपने चारों ओर आत्मभाव आरोपित करके अपने-पराए की भेद दृष्टि हटा देनी चाहिए। सभी बच्चों, स्त्री-पुरुषों, पशु-पक्षियों से आत्मभाव स्थापित किया जाए। सर्वत्र अपना ही अपना नजर आएगा और उनसे प्रेम संबंध कायम होंगे। सभी को अपना समझने का अभ्यास डालना चाहिए। यदि कोई किसी अर्थ में बुरा भी है तो घृणा, निंदा न की जाए, क्योंकि जैसे कोई व्यक्ति अपनी संतान भाई-बंधु की बुराई को क्षमा करता हुआ उसे प्रकाश में नहीं लाता और प्रशंसा जनक बातों को ही प्रधानता देता है, यही भाव अन्य सभी से बनाना आवश्यक है।

विश्व प्रेम की साधना में मूल आधार है अपने आत्मभाव का विस्तार, इसका नियमित अभ्यास डालना आवश्यक है। इसका प्रारंभ अपने घर-पड़ौस से करना चाहिए। सर्वप्रथम अपने घर के लोगों से ही आत्मीयता के संबंध कायम करने चाहिए। उससे बढ़कर अपने पड़ौस, मुहल्ले, प्रांत, देश, समाज तक अपने आत्मभाव का विस्तार करना चाहिए और एक दिन यही भाव विश्व मानव के साथ स्थापित हो जाता है। पवित्र प्रेम का अभ्यास पहले अपने घर से ही प्रारंभ करना चाहिए। प्रेम की प्रारंभिक पाठशाला घर ही है और इससे बढ़कर फिर अपना क्षेत्र विस्तृत करते रहना चाहिए।

सेवा भी प्रेमोपासना का एक आवश्यक अंग है। दूसरों की अपने से जितनी सेवा बने उतनी भरपूर सेवा करनी चाहिए। वृद्ध, रोगी, बाल-बच्चों की खूब सेवा करनी चाहिए। इस संबंध में अपने जीवन से दूसरों को कुछ देते रहने की नीति अपनानी चाहिए। जीवन का उद्देश्य यही होना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रेम ही जीवन है। प्रेम साधना ही जीवन का उद्देश्य है। निखिल विश्व में उस अनंत, रस स्वरूप, प्रेम स्वरूप की दिव्य अनुभूति प्राप्त करना, हृदय में विश्व प्रेम को प्रतिष्ठापित करना ही आत्मा का उद्देश्य है।

आत्मीयता की अभिवृद्धि से ही माधुर्य एवं आनंद की वृद्धि

एकांगी उपासना का क्षेत्र विकसित कर अपना अहंकार बढ़ाने वाले व्यक्ति, ईश्वर के सच्चे भक्त नहीं कहे जा सकते। परमात्मा सर्व न्यायकारी है। वह एक ऐसे भक्त को जो अपना सुख, अपना ही स्वार्थ सिद्ध करना चाहता हो, कभी प्यार नहीं कर सकता। संसार के और भी जितने प्राणी हैं वह सब उसी परमात्मा के प्यारे बच्चे हैं। किसी के पास शक्ति कम है, किसी के पास गुण कम हैं, तो इससे क्या ? अपने बच्चे पिता को समान रूप से प्यारे होते हैं। जो उसके सभी बच्चों को प्यार कर सकता हो परमात्मा का वास्तविक प्यार उसे ही मिल सकता है। केवल अपनी ही बात, अपने ही साधन सिद्ध करने वाले व्यक्ति लाख प्रयत्न करके भी उसे प्राप्त नहीं कर सकता।

भक्तों के लक्षण बताते हुए भगवान् कृष्ण ने गीता में लिखा है—

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रीः करुणा एव च।
निर्मयो निरहंकारः सम दुःख सुखः क्षमी।।
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़ निश्चयः।
मय्यर्पित मनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः।

(गीता १२। १३। १४)

"हे अर्जुन ! मैं उन भक्तों को प्यार करता हूँ जो कभी किसी से द्वेष भाव नहीं रखते, सब जीवों के साथ मित्रता और दयालुता का व्यवहार करते हैं। ममता रहित, अहंकार-शून्य, दुःख और सुख में एक-सा रहने वाला सब जीवों के अपराधों को क्षमा करने वाला, सदैव संतुष्ट, मेरा ध्यान करने वाला विरागी, दृढ़ निश्चयी और जिसने अपना मन-बुद्धि मुझे समर्पित कर दिया है, ऐसे भक्त मुझे अतिशय प्रिय हैं।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यहाँ हमें एक बात समझ लेनी चाहिए कि यह सारा संसार भगवान के एक अंश में ही स्थित है। छोटे-बड़े, अच्छे-बुरे सब उसी के बनाए हुए हैं। उनके हित और कल्याण का भी उसे ध्यान होना चाहिए केवल अपनी-अपनी इच्छाओं की तृप्ति ढूँढ़ने में यह कहाँ संभव है कि मनुष्य औरों के साथ द्वेष न करे। सुख की इच्छा में प्रतिस्पर्धा होती ही है। कामनाग्रस्त मनुष्य किसी की भलाई भी क्या कर सकेगा और ऐसा व्यक्ति परमात्मा की दया का अधिकारी भी क्यों बन सकेगा ?

चराचर जगत में एक ईश्वर की सत्ता ही अनेक रूपों में कार्य कर रही है। ईश्वर के एक अंग की उपासना की जाए और अन्यों की बिल्कुल उपेक्षा की जाए तो परमात्मा उस भक्त से कैसे संतुष्ट हो सकता है। भक्ति का स्वरूप सर्वांगीण होना चाहिए। मुँह को भोजन कराया जाए और पाँवों को बाँधकर एक ओर पटक दिया जाए तो वह परमात्मा अपने उपासक की भावनाओं से कैसे संतुष्ट हो सकेगा। ईश्वर के पारलौकिक और अदृश्य जगत को यदि प्राण माना जाए और संपूर्ण संसार को उसकी देह, तो देह से भी उतना प्यार होना चाहिए जितना प्राण से। देह की उपेक्षा से प्राणों का अस्तित्व भी भला संभव हो सका है ?

ईश्वर के उपासक में श्रद्धा, भक्ति, एकाग्रता, बुद्धि की तीक्ष्णता के साथ-साथ जीव दया और प्रेम का भी समन्वय होना चाहिए क्योंकि प्रेम ही विश्व का आधार है, विश्व की आत्मा है। ईश्वर प्रेम भी विश्व प्रेम के अंतर्गत है। प्राणिमात्र के साथ सद्व्यवहार, आत्मीयता और मैत्री की भावना रखने वाले लोग उसे बिना प्रयास, बिना साधन प्राप्त कर लेते हैं।

चतुर जनों की यह रीति है कि वे किन्हीं महापुरुषों की कृपा प्राप्त करने के लिए उनकी प्रिय संतान की सेवा और प्यार करते हैं। अपने आत्मीय जनों को प्यार करता हुआ देखकर बड़े कठोर हृदय के व्यक्ति को भी पिघलते देखा गया है। फिर परमात्मा जो इतना सहृदय और दयालु है वह अपने बालकों के प्रति कर्त्तव्य भावना को पूरा हुआ देखकर भला क्यों न प्रसन्न होगा। इससे तो वे भक्त की अन्य कामनाएँ भी सहर्ष पूरी कर देते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वेद में कहा गया है कि "जो लोग संपूर्ण प्राणियों के हित में संलग्न रहते हैं परमात्मा उनका भार स्वयं वहन करता है।" पर समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों का समुचित रीति से पालन न करने वाले ईश्वर-भक्त आत्म-कल्याण में समर्थ नहीं होते। समाज भी तो मनुष्य का अपना ही स्वरूप है। अपने स्वार्थ की पूर्ति में तो उद्यत रहा जाए, पर अपने ही समान अपने समाज के प्रति परमार्थ का ध्यान न रखा जाए तो उस ईश्वर-उपासना से आत्म-संतोष होना असंभव है।

निर्ममता और अहंकार से मुक्ति मिल गई, इसका प्रमाण एकात्मवादी होकर नहीं दिया जा सकता। मनुष्य सबके प्रति उदारतापूर्वक व्यवहार करेगा तभी उसकी ममता का भाव नष्ट होगा। अहंकार भी, जब तक अपने आपको औरों के लिए त्यागपूर्वक घुलाया न जाएगा तब तक, दूर होना संभव नहीं। ईश्वर कभी किसी के सामने प्रत्यक्ष नहीं हुआ। इसलिए वह प्रत्यक्ष सेवाएँ भी कभी नहीं ले सकता। उपासना और प्रार्थना से प्रभावित होकर मनुष्य रूप धारण कर कदाचित वह ईश्वर अपनी विभूतियों सहित भक्त के समक्ष उपस्थित हो जाता और भक्त अपना सर्वस्व अर्पण कर देता तो संभंव था उस स्थिति में उसे आत्म-संतोष हो जाता, पर परमात्मा के संसार में ऐसी व्यवस्था नहीं है। यदि वह अपने आराधक की त्याग वृत्ति को देखना चाहेगा तो अपने किसी बालक को ही परीक्षा के लिए भेजेगा। हम अपने बच्चे, धर्मपत्नी, परिवार, गाँव, मुहल्ले वाले, समाज और राष्ट्र तथा संपूर्ण विश्व के लिए आत्म-त्याग की भावना का परिष्कार करके ही तो सर्वात्मा की कृपा का पुण्य फल प्राप्त कर सकते हैं और यह तभी संभव है जब हम सबके साथ प्यार करें। सबके साथ आत्मीयता रखें, सबके साथ सहानुभूति बरतें, सबकी उन्नति में सहयोग दें। किसी के साथ ईर्ष्या-द्वेष, छल-पाखंड, अन्याय, अत्याचार करके परमात्मा की कृपा का अधिकार प्राप्त करने की बात सोचना मिथ्या है।

तब यह आवश्यक है कि उपासना का स्वरूप बहुमुखी हो। आत्मोद्धार के लिए एकांत में बैठकर करुणा-भाव से ईश्वर की उपासना की जाए, पर अपने अन्य भाइयों को भी असहाय अवस्था

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से ऊपर उठाया जाए। भगवान के स्वरूप को याद करते हुए प्रेमपूर्वक उनके नाम का जप और कीर्तन, ध्यान और भजन तो किया जाए, पर उनके समाज शरीर की भी उपेक्षा न की जाए। संपूर्ण जीवों में भगवान् का अंश विराजमान है, सब लोग उसी की विविध मूर्तियाँ हैं। सब उसके अंग हैं। सब उसके साधन हैं। एक साधन के लिए अन्य साधन क्यों भुलाए जाएँ ? ईश्वर की एकांगी उपासना क्यों की जाए ?

ईश-प्रेम से परिपूर्ण और मधुर कुछ नहीं—

परमपिता परमात्मा से वियुक्त होकर जीव ने अपनी एक निराली सृष्टि बना ली है। छोटा बालक जिस तरह घर के आँगन में मिट्टी इकट्ठी कर एक छोटा-सा घरौंदा बनाकर उसमें विशाल आकार-प्रकार की साधन सामग्रियाँ चाहता है, पर न तो उनके लिए उसके उस छोटे-से घरौंदे में स्थान होता है, न पात्रत्व। इसलिए उसकी इच्छाएँ पूर्ण नहीं होतीं या जान-बूझकर पिता उन्हें पूरा नहीं करता। वह तो सब घर की व्यवस्था का स्वामी होता है, उसे सबका ही ध्यान रखना पड़ता है। इसलिए जितना उसका घरौंदा था, उसी अनुपात से दो-चार पैसे, छटांक दो छटांक सामग्री उसे दे देता है, पर उससे बच्चे को न सुख मिलता है, न संतोष। छोटी-सी इकाई में पूर्णता की इच्छा न रखने वाले बच्चे की तरह जीव को भी अंततः अपनी लघुता पर असंतोष और पीड़ा ही होती है।

तब वह अपने एकांत में, अंतःकरण की गहराई में मुख डालकर झाँककर देखता है तो पाता है कि अब तक वह जिन वस्तुओं की इच्छा कर रहा था वह तो बंधनरूप थीं। नित्य शाश्वत आनंद के लिए उनसे कुछ काम बनने वाला नहीं था। यह तो सब क्षणभंगुर वस्तुएँ थीं। रुपया, पैसा, वस्त्र-आभूषण, बँगले, पंखे, रेडियो, नौकरी, पद-प्रतिष्ठा यहाँ तक कि पिता-माता, पुत्र-पत्नी, सुहृद-सखा, परिवार भी एक दिन छूट ही जाता है, चाहे उससे कितना ही मोह बढ़ा लें, चाहे उससे कितना ही प्रेम कर लें। गीता में कहा है—"संसार में गुण ही गुण बर्तते हैं, जो सब वस्तुएँ जहाँ तक उनकी सीमा, मर्यादा और समय है, वहीं तक थोड़ा-सा सुख-संतोष प्रदान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर पातीं हैं। उसके बाद जीव का पुनः वही अकेलापन। फिर वही लघुता फिर वही भय, फिर वही इच्छाएँ, फिर वही दौड़-धूप, आपा-धापी, अविश्राम, अविश्राम, अविश्राम ! न इच्छाएँ पिंड छोड़ती हैं और न महत्त्वाकांक्षाएँ। मृगमरीचिका की तरह सुख और शांति की चाह में जीव सारे संसार का परिमंथन किया करता है, पर हाथ सिवाय निराशा, कष्ट, अपमान, चिंता, द्वेष-ईर्ष्या, असफलता, विकलता के अतिरिक्त कुछ नहीं लगता। नैपोलियन जो अनेक राष्ट्रों का भाग्य-निर्माता था, वह भी कैसे दुःखद परिस्थितियों में मरा। महापुरुषार्थी सिकंदर का अंत वहाँ हुआ, जहाँ उसे दवा की व्यवस्था भी न हो सकी।

अपनी इस स्थिति पर विचार करते-करते जीव अपने पिता परमात्मा की शरण आता है। बहुत दिन के बाद निधि रूप में अपने सर्वस्व, अपने शाश्वत प्राण, अपने लक्ष्य, अपने गंतव्य, अपने प्रकाश को पाकर उसका अंतःकरण उमड़ने लगता है, वह कभी-कभी अपनी अब तक की गई बीती स्थिति पर दुःख और पश्चात्ताप करता है। फिर भगवान से स्नेहपूर्ण शिकायत करता है, उसे भय रहता है, कहीं पुनः इसी भ्रमजाल में न फँसना पड़े, इसलिए डरता हुआ जीव भगवान की स्तुति भी करता है—हे प्रभु ! संभव है संसार के झंझटों में मैं तुम्हें भूल जाऊँ, पर तुम मुझे छोड़ना नहीं। मैं तुम्हारा ही प्राण हूँ, मैं तुम्हारा ही अंश हूँ, माना कि प्रमाद बहुत किया, भूलें बहुत कीं, पर अब ऐसा ज्ञान दो प्रभु, ऐसी शक्ति दो, नाथ जिससे जर्जर जीवन की नाव पार लग जाए। आकर्षणों से भरे इस संसार सागर से जीवनतरिणी पार उतर जाए !

मुझे मालूम नहीं प्रभु ! तुमसे मैं बिछुड़ा क्यों ? क्या इसमें भी कुछ रहस्य है ? मैं अपनी इच्छा से संसार में आया या तुम्हीं मुझे अकेला छोड़कर मेरे सयानेपन पर, मेरी अतुकांत भूलों पर हँसने और उसका चिर आनंद लेने के लिए पर्दे में छुपे हो, किंतु हे प्रभु ! अब यह खेल खेलने की शक्ति मुझमें नहीं रही। मैंने संसार के माया रूप को जब से पहचान लिया है, तब से एक तुम्हारा ही प्रेम उमड़ रहा है। भीतर भी तुम्हारा प्रेम जाग रहा है और सृष्टि के कण-कण में भी तुम्हारा प्रेम प्रतिभासित हो रहा है। हे प्रभु ! यह कैसी पीड़ा है जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तुम्हें आँखों से अलग भी नहीं होने देना चाहती और तुम में मिलने, समा जाने का अवसर भी नहीं देती। अपनी तृणवत् सत्ता से थके हुए जीव को विश्राम दो, अपनी मधुर गोद में ले लो, अपने प्राणों में छिपा लो, जिससे भय, लज्जा और विषाद के संपूर्ण मल आवरण धुल जाएँ। यह सब तुम्हारे से ही संभव है। संसार की ममता में यह सब कहाँ। प्रेम के शाश्वत सिंधु ! तुम्हीं इतने निर्मल हो कि संसार का सारा मल तुम्हारे अंदर आकर धुल जाता है। हे प्रभु ! तुम्हीं इतने प्रकाशवान हो कि संसार का सारा अज्ञ-अंधियार तुम में समा जाता है। तुम निर्बल को भी बलवान करने वाले, घृणित को भी हृदय से लगा लेने वाले हो। तुम्हारी शरण छोड़कर जीव अन्यत्र जा भी नहीं सकता।

इस प्रकार जब सब ओर परमात्मा का प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देने लगता है, जीव अपनी लघुता की पहचान कर लेता है और कातरभाव से परमात्मा को पुकारता है तो उसके अंतःकरण की गहराई भी स्थिर नहीं रह सकती। वह अंतःकरण को मथ डालती है और उसमें से दिव्य ईश्वरीय प्रेम निखरता हुआ चला आता है। प्रेम में ही परमेश्वर है, प्रेम की सत्ता ने चर-अचर, स्थावर-जंगम सबको क्रियाशील बना रखा है। प्रेम ही संपूर्ण पवित्र है। अपवित्रता तो आसक्ति थी, मोह था, ममता थी, वासना थी। जब वही न रहे तो मलिनता कैसी ? जीव मात्र के सौंदर्य का सागर अंतःकरण में फूट पड़ता है। जीव मात्र की चैतन्यता की शक्ति अंतःकरण में जाग पड़ती है। जब सब अपने, जब सब कुछ अपना तो कहाँ अभाव, कहाँ आसक्ति, कहाँ अज्ञान ? सब ओर मंगल, आनंद ही आनंद बिखरा दिखाई देने लगता है।

प्रतिक्रिया का नियम तो जड़ वस्तुओं तक में है। कुएँ और पोखर की ओर मुख करके बोली गई आवाज भी जब प्रतिध्वनित होकर आ जाती है तो निःस्सीम गहराई से लौटी हुई भावनाओं की प्रतिक्रिया का तो कहना ही क्या। जीव जिस भावना से परमात्मा की पुकार लगाता है, उसी गहराई से भगवान का प्रेम, आशीर्वाद और प्रकाश भी उस तक पहुँचने लगता है। उसकी प्रिय वाणी फूटती है और कहती है—"वत्स ! हम तुम दोनों एक ही हैं, तुम मुझसे विलग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कब हो ? यह जो तुम खेल-खेलते रहे हो वह मेरी ही तो इच्छा थी, उसमें जो कुछ खराब था, उसका दुःख न कर, उसे भी मेरी ही इच्छा समझकर मुझको ही सौंप दें। तूने ! यह पाप किए हैं, ऐसा भूलकर अब यह मान कि यह तो मेरा ही अभियान, मेरी ही इच्छा थी। अब तू उन सब बुराइयों को समर्पित करके निर्द्वंद्व हो जा। जब तू सारे संसार से मोह-ममता के बंधन हटाकर 'अहं विमुक्त' हो रहा है, तो अपनी भूलों और गलतियों को ही अपनी मानने की भूल क्यों करता है ? अपना संपूर्ण अहंकार छोड़कर तू संपूर्ण भाव से मेरी शरण में आ गया है तो पापों को धो डालने का उत्तरदायित्व भी मेरा ही है।"

भावनाओं के इस आदान-प्रदान में भी बड़ा रस है। माना कि परमेश्वर दिखाई नहीं देता। पर मन की मलिनताओं के प्रति घृणा और विराट के प्रति प्रेम से निर्मित स्वच्छ जीवन का सुख तो प्रत्यक्ष है ही। जिसके हृदय में सत्य है वह भला किसी से भय क्यों करेगा, जिसके हृदय में सबके लिए प्रेम, दया और करुणा होगी, वह भला किस अभाव से पीड़ित होगा ? प्रेम में वह शक्ति है, जो हिंसक जीव को भी वश में कर लेती है, फिर जब जीव मात्र में परमात्मा और परमात्मा के प्रति अपनत्व का भाव उमड़ने लगेगा तो किसी से छल-कपट, द्वेष-दुर्भाव का दुःख मनुष्य क्यों उठाएगा।

आत्मीयता की इस साधना से बढ़कर और कोई साधना नहीं, उसमें आदि से लेकर अंत तक मधुरता, सौंदर्य ही सौंदर्य है, किंतु वह सौंदर्य और माधुर्य संसार के किसी एक पदार्थ या परिस्थिति में उपलब्ध नहीं हो सकते। जीव स्वयं लघु है, उसकी तरह ही हर कण छोटा और अभाव की स्थिति में है, सबका सम्मिलित भाव परमात्मा है। आत्मीयता ही उसका निर्विवाद और निर्भय स्वरूप है। इसलिए हम उसके प्रति आत्मीयता अपनाकर ही अपनी लघुता को विभुता में बदल सकते हैं। परमात्मा के प्रति प्रगाढ़ अपनत्व में ही वह शक्ति है, जो जीव को रस माधुर्य और आनंद प्रदान करती है। जिसने भी उससे स्वयं को जोड़ लिया, सघन आत्मीयता और अभिन्नता स्थापित कर ली, उसका आत्म-विस्तार अनंत हो जाता है। उसकी स्वयं की परिधि मिट जाती है और परमात्मा का विस्तार ही उसका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आत्म-विस्तार बन जाता है। परमात्मा का वैभव उसका अपना वैभव बन जाता है। आत्म-विस्तार की यही परिणति है। अंततः वैभव, असीम आनंद तथा अखंड शांति। अतः आत्म-संकोच नहीं, आत्म-विस्तार ही साध्य एवं लक्ष्य होना चाहिए। आत्मीयता के घेरे को, अपनी पत्नी-बच्चे या परिवार तक सीमित रखने वाले दीन-हीन, संकीर्ण बने रहें या परमात्मा की विराट सत्ता तक का आत्मविस्तार कर, अनंत वैभव के स्वामी बनें, यह हर एक व्यक्ति के अपने ही हाथ में है। आत्मीयता की अभिवृद्धि से ही माधुर्य और आनंद की वृद्धि होती है।

❐ ❐

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मुद्रक : युग निर्माण प्रेस, मथुरा (उ० प्र०)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

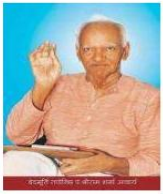

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org